आज़ादी का अमृत महोत्सव

राजभाषा विशेषांक

जल विकास

त्रैमासिक | खंड 32 | अक्तूबर, 2021

Quarterly | Vol. 32 | October, 2021

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की आंतरिक पत्रिका

(In house Bulletin of National Water Development Agency)

पूर्व हिन्दी पखवाड़ों की झलकियां

इस अंक में

संदेश एवं अपील

–	महानिदेशक महोदय की ओर से	4
–	मुख्य अभियंता (मुख्यालय) का संदेश	5
–	सहायक निदेशक (राजभाषा) का संदेश	6
–	महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा राजभाषा अपील	7
–	माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	8
–	माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	11
–	माननीय जल शक्ति एवं जनजातीय कार्य राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	12
–	माननीय सचिव, जल शक्ति, भारत सरकार द्वारा राजभाषा संदेश	13

लेख

–	वैदिक रीति से दिव्य अमृत जल का प्रबंधन" **डॉ आर.एन.संखुआ**, मुख्य अभियंता (दक्षिण)	14
–	"जल है तो कल है" **सुशील कुमार श्रीवास्तव**, सहायक अभियंता	22
–	"राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में राजभाषा संरक्षण एवं संवर्धन में मेरे पथप्रदर्शक" अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा)	23

रा.ज.वि.अ. की गतिविधियां

–	तकनीकी सारसंग्रह	27
–	प्रशिक्षण/संगोष्ठी/सम्मेलनों में भागीदारी	34
–	नियुक्ति/पदोन्नति/सेवानिवृत्ति/शोक का विवरण	35
–	आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित तकनीकी संगोष्ठी की रिपोर्ट	37
–	मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा–2021 का आयोजन	46
–	मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2021 का आयोजन	53
–	मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2021 का आयोजन	61

कविताएं

–	कोरोना काल **अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा)**	68

रा.ज.वि.अ. पदाधिकारियों के बच्चों का कोना

–	जल संरक्षण पर कविता बानी, पुत्री श्री विक्रम सिंह	70
–	मैं पानी हूँ पर कविता प्रखर वाधवा, पुत्र श्रीमती रीना वाधवा	71
–	जल संरक्षण पर चित्र नीलेश मौर्य, पुत्र श्री ईश्वर लाल मौर्य	72
–	जल संरक्षण पर चित्र प्रत्युष वाधवा, पुत्र श्रीमती रीना वाधवा	73

महानिदेशक की ओर से

हर देश की अपनी एक भाषा होती है जिसमें उस देश के सभी सरकारी कामकाज एवं सामान्य व्यवहार, खोज, प्रयास आदि किए जाते हैं और जनमानस के लिए भी वह भाषा प्रयोग की दृष्टि से सरल एवं ग्राहय होती है। हमारी उन्नति का मार्ग हमारी अपनी भाषा में ही संभव होती है चीन की चाइनीज, जापान की जापानी तथा इजरायल की हिब्रू इसका ज्वलंत उदाहरण है। हमारा देश एक बहुभाषिक देश है, जिसमें बहुत सी प्राचीन और उन्नत भाषाओं में से हिन्दी को राजभाषा चुना है।

वर्षों पूर्व लिखी गई भारतेंदु हरिश्चंद्र की पंक्तियां आज भी प्रासंगिक प्रतीत होती हैंः

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटै ना हिय को शूल'।

वर्तमान वैश्विक संदर्भ में हिन्दी का जो विकसित स्वरूप उभर कर आया है वह बाजार, सूचना प्रौद्योगिकी, कार्यालयी प्रयोग, मनोरंजन, रोजगार, समाचार, संचार माध्यम, कृषि, विज्ञान आदि के क्षेत्रों में स्पष्ट परिलक्षित हो रहा है। जिस भाषा की शुरुआत निजता से हुई वही भाषा कालांतर में सामूहिकता का बंधन सूत्र बनी और आज के हिन्दी के वटवृक्ष को जन्म दिया। हिन्दी ने अपना महत्वपूर्ण स्थान सुनिश्चित किया है जिसके परिणाम स्वरूप इसके पढ़ने, लिखने और बोलने वालों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

राजविअ राजभाषा हिन्दी के प्रयोग के लिए पूर्णतः समर्पित एवं प्रतिबद्व संगठन है जो अपने तकनीकी कार्यों को भी हिन्दी में करने का हर संभव प्रयास करता रहा है। यह हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के प्रति समर्पण एवं प्रतिबद्धता का ही परिणाम रहा है कि हम स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 25 अक्टूबर, 2021 को हिन्दी में एक दिवसीय तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन करने में सफल रहे हैं।

इसी के साथ–साथ भारत सरकार ने राष्ट्रीय योजनाओं में शामिल केन–बेतवा नदी जोड़ परियोजना जो केन्द्र मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के सूखाग्रस्त जिलों को पेयजल एवं सिंचाई के लाभ पहुँचाने के लिए केन्द्र मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की पहली साझा परियोजना है, सहित अन्य उपयोगों के लिए जल के साथ–साथ जल आधारित अन्य अवसरों को भी उपलब्ध कराने के लिए क्रियान्वयन के स्तर पर तैयार है।

जल विकास पत्रिका का राजभाषा विशेषांक हमारा एक विनम्र प्रयास है जिसके माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में और आगे बढ़कर आपसे जुड़ने का प्रयास करते हैं। आशा है आपको यह अंक रूचिकर प्रतीत होगा और आप अपने विचारों से हमें अवगत कराएंगे

(भोपाल सिंह)
महानिदेशक

संदेश

बहुभाषिकता, सांस्कृतिक भिन्नता के बावजूद भी हमारे देश में भाषिक एकता तथा सांस्कृतिक प्रवाह के दर्शन होते हैं। विविधता में भी एकता परिलक्षित होती है। भाषा के संदर्भ में भारत सरकार की सदा से ही नीति रही है कि राजभाषा हिन्दी को जन–जन की भाषा बनाया जाए और इसके प्रचार के साथ इसका प्रसार एवं व्यवहार बढाया जाए।

इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान निर्मात्री सभा द्वारा 14 सितम्बर, 1949 में हिन्द्री को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। परिणामस्वरूप 26 जनवरी, 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार यह प्रावधान किया गया कि संघ सरकार की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी और हमारा कर्तव्य है कि हम हिन्दी का प्रचार–प्रसार व अभिवृद्दि सुनिश्चित करें। भाषा संबंधी उपरोक्त संवैधानिक व्यवस्था के अनुपालन तथा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दृष्टि से राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हम इसी संकल्प के साथ निरंतर आगे बढ़ते रहे हैं और आगे भी बढ़ते रहेंगे।

इस संदर्भ में हमने हिन्दी में तकनीकी कार्यों को करके नए आयाम छुए हैं जिनमें देश की बहु प्रतीक्षित एवं बहुउद्देशीय नदी जोड़ परियोजना केन–बेतवा लिंक परियोजना हमारे समक्ष क्रियान्वित होने जा रही है जिसके हम साक्षी हैं।

हम राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिन्दी का प्रयोग जारी रखने का संकल्प करते हैं।

सधन्यवाद

(आर के जैन)
मुख्य अभियंता (मुख्यालय)

संपादकीय

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल एक वैश्विक मुद्दा है। यह सत्य है कि मानव ने जीवन के हर क्षेत्र में खोज एवं आविष्कार किए हैं। परंतु यह भी अकाट्य सत्य है कि जल संबंधी समस्याओं के संबंध में खोज एवं आविष्कार उस गति से आगे नहीं बढ़ रहे जितनी कि समस्याएं बढ़ रही हैं।

दुनिया में जल एक सीमित संसाधन है उसमें भी पेयजल की उपलब्ध प्रमात्रा की सीमा के भीतर रहकर ही इसका उपयोग करना हमारी बाध्यता है। अब हमारे समक्ष एक ही रास्ता है कि जल के प्रबंधन, संरक्षण और विवेक सम्मत सदुपयोग कर आगे आने वाली पीढ़ी के लिए भविष्यगत योजनाएं बनाई जाएं। राजविअ इसी दिशा में कार्य कर रहा है और केन्द्र एवं राज्यों द्वारा केन–बेतवा का कार्यान्वयन सुनिश्चित होना हमारी एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इस अंक में पूर्व प्रस्तुत सभी बिन्दुओं के साथ–साथ तकनीकी संगोष्ठी की रिपोर्ट, राजविअ मुख्यालय, मुख्य अभियंता (उत्तर) एवं मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा उनके अधीनस्थ क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा–2021 में कराई गई विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं एवं उनमें पुरस्कृत पदाधिकारियों का विवरण भी झलकियों के साथ प्रकाशित किया जा रहा है। महानिदेशक महोदय द्वारा जारी अपील एवं माननीय, गृह मंत्री, भारत सरकार, श्री अमित शाह द्वारा जारी संदेश, माननीय मंत्री जल शक्ति, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत का संदेश, सचिव, जल शक्ति मंत्रालय का संदेश भी प्रकाशित किया जा रहा है।

जल विकास का राजभाषा अंक प्रत्येक वर्ष नई अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयत्न करता रहा है और मुझे पूरा विश्वास है कि जैसे कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण है उसी प्रकार यह राजभाषा विशेषांक राजविअ की समस्त गतिविधियों से आपको परिचित कराने का प्रयास है। इसमें प्रकाशित तकनीकी लेख में आपको जल संबंधी कई पहलुओं एवं समाधानों का परिचय मिलेगा।

आशा है कि जल विकास का यह अंक आपकी अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा और इस संबंध में अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं से आप हमें अवगत कराएंगे।

सधन्यवाद

(अर्चना गुप्त)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

भोपाल सिंह
महानिदेशक
Bhopal Singh
Director General

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण
जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार
(जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग)
National Water Development Agency
Ministry of Jal Shakti, Government of India
(Department of Water Resources, River Development and Ganga Rejuvenation)

दिनांक: 17 अगस्त, 2021

अपील

भाषा अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। इसके द्वारा हम अपने भावों, विचारों आदि को सटीक व सार्थक शब्दों के माध्यम से श्रोताओं/पाठकों तक पहुंचाते हैं। हिंदी एक ऐसी ही सशक्त भाषा है जो जन-जन की भाषा के रूप में निरंतर आगे बढ़ रही है। आज के परिप्रेक्ष्य में हिंदी केवल एक देश की सीमा में बंधकर नहीं रह गई है वरन् अब यह अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप में उभर चुकी है। दुनिया अब भारत को एक उभरती हुई आर्थिक महाशक्ति के रूप में देख रही है। इस परिप्रेक्ष्य में भी हिंदी का महत्व कम नहीं हो रहा है बल्कि इसे राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़कर और सशक्त रूप में आगे बढ़ने की स्वतंत्रता मिली है।

अब देश आजादी का 75वां अमृत महोत्वस मना रहा है और हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकृति मिले हुये 73 वर्ष पूरे हो चुके हैं। इस दौरान कार्यालयी राजभाषा हिंदी ने भी अपने प्रायोगिक क्षेत्र में अपनी सार्थकता पूर्ण रूप से सिद्ध कर दी है और निरंतर नए-नए क्षेत्रों में यह अपने पद-चिन्ह छोड़ रही है।

हमारा संगठन जल जैसे महत्वपूर्ण विषय से जुड़ा हुआ है। इस दृष्टि से भाषा और जल दोनों हमारे दैनिक जीवन के लिये अमूल्य निधि हैं जिन्हें आम जन के बीच शब्द और अर्थ की भांति प्रायोगिक दृष्टि से विकसित करने, सर्वसुलभ बनाये रखने तथा इस कार्य को उत्तरोतर जारी रखने के सतत प्रयास की आवश्यकता एवं अपेक्षा प्रतीत होती है। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण भी निरंतर हिंदी और जल दोनों क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहा है।

हम सबका यह संवैधानिक दायित्व है कि हम अपने कार्यालयी काम-काज में हिंदी का मूलरूप से प्रयोग करें और मेरी यह अपील है कि संविधान की भावनाओं के अनुरूप अपने सभी कार्यालयी कार्य स्वयं भी मूल रूप से हिंदी में करें और अपने सहकर्मियों को भी मूलरूप से हिंदी में कार्य करने के लिये प्रेरित करें।

(भोपाल सिंह)
महानिदेशक

18–20, सामुदायिक केन्द्र, साकेत, नई दिल्ली / 18-20, Community Centre, Saket, New Delhi-110017
दूरभाष / Phone : 011–26519164 / 41033995 फैक्स / Fax : 011-26513846
कक्ष न. 305, पालिका भवन, आर.के. पुरम, सेक्टर–13, नई दिल्ली–110066
Room No. 305, Palika Bhawan, R.K. Puram, Sector-13, New Delhi-110066
दूरभाष / Phone : 011-24195726 / 24195700, फैक्स / Fax : 011-24195727
ई–मेल / E-mail : dg-nwda@nic.in वेबसाइट / Website : www.nwda.gov.in

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
सत्यमेव जयते
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गजेन्द्र सिंह शेखावत
Gajendra Singh Shekhawat

जल शक्ति मंत्री
भारत सरकार
Minister for Jal Shakti
Government of India

सत्यमेव जयते

0 8 SEP 2021

संदेश

हिंदी दिवस के अवसर पर आपको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत एक बहुभाषी देश है। यहां की सभी भाषाएं अपने आपमें समृद्ध और सक्षम हैं। हमारे संविधान निर्माताओं ने काफी सोच-विचार के बाद 14 सितम्बर, 1949 के दिन हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया है और संविधान सभा ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया था कि स्वतंत्र भारत की राजभाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी होगी। उस समय भी यह एक ऐसी भाषा थी जिसे भारत की अधिकतर जनता बोल सकती थी।

राजभाषा के रूप में हिन्दी स्वीकार करने का मुख्य उद्देश्य है कि जनता का काम जनता की भाषा में सम्पन्न हो, उसमें कठिन भाषा शैली के लिए कोई स्थान नहीं होता। सरकारी कामकाज में हिन्दी की प्रगति एवं प्रचार-प्रसार के लिए आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। कार्यालय की भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग करके उसे बोझिल न बनाए।

आज के संदर्भ में जल संचयन और जल के उचित प्रयोग जैसे विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। जल शक्ति मंत्रालय के जल से जुड़े हुए कार्यकलापों से संबंधित जानकारी आम जनता की समझ में आने वाली सरल भाषा में प्रदान की जानी चाहिए। ऐसा करके हम अपने दायित्व को और अधिक महत्वपूर्ण ढंग से पूरा कर सकते हैं।

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय में उत्साह के साथ 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने कामकाज में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करके संविधान के प्रति अपनी निष्ठा और समर्पण की भावना का परिचय दें।

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

जल शक्ति अभियान
संचय जल, बेहतर कल

Office : 210, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
Tel: No. (011) 23711780, 23714663, 23714200, Fax : (011) 23710804
E-mail : minister-jalshakti@gov.in

विश्वेश्वर टुडु
BISHWESWAR TUDU

सत्यमेव जयते

जल शक्ति एवं
जनजातीय कार्य राज्य मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-110001
MINISTER OF STATE FOR
JAL SHAKTI & TRIBAL AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA
NEW DELHI - 110001

संदेश

हिंदी दिवस पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हिन्दी हमारे देश की सबसे बड़ी संपर्क भाषा है। भारत के संविधान के अनुसार भी संघ की राजभाषा हिन्दी है। राजभाषा हिन्दी में सरकारी कामकाज करने से सरकार और जनता के बीच परस्पर विश्वास बढ़ता है इसलिए हमारी यह जिम्मेदारी है कि हम अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करें। हमारा देश एक बहु-भाषी देश है जहां अनेक संस्कृतियां विद्यमान हैं। हिन्दी एक सेतु के रुप में काम कर रही है जो भारत की विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, और संप्रदायों को आपस में जोड़ती है।

सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध कराए हैं। कंप्यूटरों पर हिन्दी में काम करने में अब कोई कठिनाई नहीं है। अलग से किसी हिन्दी सॉफ्टवेयर के बगैर कंप्यूटरों पर यूनिकोड समर्थित फॉन्टस् के साथ आसानी से हिन्दी मे कार्य किया जा सकता है। साथ ही यह भी जरूरी है कि हम कम्प्यूटरों पर उपलब्ध इन आधुनिक सुविधाओं के उपयोग से हिन्दी को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दें और राजभाषा द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने की ईमानदार कोशिश करें।

मुझे उम्मीद है कि जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी 'हिन्दी पखवाड़ा' समारोह के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे।

'हिन्दी पखवाड़े' के इस शुभ अवसर पर मैं आप सभी को बधाई देते हुए 'हिन्दी पखवाड़े' की सफलता की कामना करता हूँ।

14.9.2021

(विश्वेश्वर टुडु)

215, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली -110 001, 215, Shram Shakti Bhawan, Rafi Marg, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23708419, 23718759, फैक्स : 011-23354496, Tel. : (011) 23708419, 23718759, Fax : 011-23354496
415, 'बी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली -110 001, 415,'B' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110 001
दूरभाष : (011) 23070580, 23070669, Tel. : (011) 23070580, 23070669, E-mail : mos-tribalaffairs.gov.in

पंकज कुमार
PANKAJ KUMAR
सचिव
SECRETARY
Tel. : 23710305, 23715919
Fax : 23731553
E-mail : secy-mowr@nic.in

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास
और गंगा संरक्षण विभाग
श्रम शक्ति भवन
रफी मार्ग, नई दिल्ली-110 001
GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF JAL SHAKTI
DEPARTMENT OF WATER RESOURCES,
RIVER DEVELOPMENT & GANGA REJUVENATION
SHRAM SHAKTI BHAWAN
RAFI MARG, NEW DELHI-110 001
http://www.mowr.gov.in

अपील

भारत के संविधान के अनुसार भारत संघ की राजभाषा हिन्दी है। भारत में हिन्दी की व्यापकता और लोकप्रियता को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। हमारा यह दायित्व है कि केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अधिकाधिक कार्य राजभाषा हिन्दी में करें। किसी भी समाज, राष्ट्र और सभ्यता की पहचान उसकी अपनी भाषा से होती है। भाषा विचारों के आदान-प्रदान का माध्यम होती है। हिन्दी का प्रयोग बढ़ाना एक राष्ट्रीय कार्य है।

सरकारी कामकाज में पिछले कई वर्षों से हिन्दी का प्रयोग आगे बढ़ा है। हिन्दी को आगे बढ़ाने में विभिन्न प्रकार के मीडिया/सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, परन्तु उसी गति से सरकारी फाइलों में इसका प्रयोग नहीं बढ़ पाया है। सरकारी दफ्तरों में हिन्दी की गति को तीव्रता देने के लिए अभी और प्रयास करने की जरूरत है।

विभाग में दिनांक 14 सितम्बर, 2021 से 28 सितम्बर, 2021 तक "हिन्दी पखवाड़ा" आयोजित किया जा रहा है। इस दौरान हिन्दी से संबंधित कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। यह प्रतियोगिताएं न केवल आकर्षक हैं बल्कि ज्ञानवर्धक भी हैं। मुझे उम्मीद है कि विभाग के अधिक से अधिक अधिकारी और कर्मचारी इसमें भाग लेंगे और यह आयोजन हिन्दी में काम करने के लिए आप सभी को उत्साह और प्रेरणा प्रदान करेगा। हिन्दी में काम करने की भावना केवल हिन्दी पखवाड़े तक ही सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पूरे वर्ष हिन्दी में कार्य किया जाना चाहिए ताकि हम अपने संवैधानिक दायित्वों को निभा सकें।

मुझे विश्वास है कि विभिन्न भाषाओं में सौहार्दपूर्ण समन्वय से हमारे मंत्रालय के सभी अधिकारी और कर्मचारी अपने सक्रिय सहयोग से राजभाषा हिन्दी को बढ़ावा देंगे।

इस अवसर पर, मैं आप सभी को बधाई देता हूँ और **'हिन्दी पखवाड़े'** के सफल आयोजन की कामना करता हूँ।

पंकज कुमार

(पंकज कुमार)

जल संरक्षण - जीवन संरक्षण
Conserve Water - Save Life

"वैदिक रीति से दिव्य अमृत जल का प्रबंधन"

डॉ आर.एन.संखुआ

(संस्कृत में जल को दिव्य अमृत के रूप में जाना जाता है, इसे ब्रह्मांड काल का कहा जाता है, जो एक अंडे में सन्निहित है, जिससे सभी चीजों की उत्पत्ति हुई और ऐसा विचार है कि इससे शांति, सुख, संपदा, दीर्घजीवन एवं अच्छे स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई (सलिलम् अपराकेतम् ऋगवेद •.29.3))

सारांश

जल केवल भौतिक अस्तित्व का स्रोत नहीं है, अपितु यह शांति, सहिष्णुता, आत्मदान आदि गुणों का एक महत्वपूर्ण स्रोत है, जिससे आध्यात्मिक पोषण प्राप्त होता है। यदि मानव समाज में एक आध्यात्मिक संस्कृति को बढ़ावा दिया जाता है तो उसका प्रत्येक सदस्य जल की बर्बादी को रोकने पर अच्छी तरह ध्यान देगा। वैदिक एवं पौराणिक भजनों में नदियों को जीवनदायी, जीवन का पोषण एवं रक्षण करने वाली दिव्य माताओं के रूप में वर्णित किया गया है। प्राचीन ग्रंथ, विशेष रूप से वैदिक साहित्य, प्राकृतिक संसाधनों को बनाए रखने पर जोर देते हैं। पर्यावरण के संरक्षण को अनौपचारिक नियमों के माध्यम,जैसे परम्परा, दैनिक अनुष्ठान, प्रार्थना आदि के रूप में मानव कल्याण पर विशेष जोर देने के साथ जीवन के सभी रूपों के प्रति करुणा व्यक्त करना माना जाता है, जिसमें पवित्र कार्यों के परिणाम–स्वरूप प्रकृति का आशीर्वाद प्राप्त होता है (पृथ्वी – माता एवं वातावरण दृ पिता), जबकि गलत क्रियाएँ प्रकृति एवं उसके कार्यों को नुकसान पहुंचाते हैं। ध्यान इस बात पर है कि पवित्र जल कैसा था और कैसा है, और जल प्रबंधन पर इसका क्या प्रभाव था और है। वेदों एवं प्रारंभिक विद्वानों की पांडुलिपियों में जल प्रबंधन के कई पहलुओं का संदर्भ है, यथा दृ जल प्रबंधन में प्रौद्योगिकी और प्रयोग, सिंचाई जलप्रबंधन, जल आवंटन एवं मूल्यनिर्धारण, पानी के औषधीय गुण और सतत उपयोग के लिए जल संरक्षण। इन सभी पहलुओं का मूल जल को 'दिव्य घटक' के रूप में समझना था, जहां उसके प्रति श्रद्धा,विश्वासप्रणालियों, प्रथाओं पर ज़ोर था, जिनके माध्यम से जल के उपयोग के प्रति जागरूकता एवं सम्मान की भावना पैदा की गई जिससे उसके संरक्षण में भी मदद मिली। ऐसी कई सरल एवं टिकाऊ प्रौद्योगिकियाँ भी हैं जो व्यवहार में थी और आज भी प्रभावी पायी जाती हैं। यह लेख जल प्रबंधन का एक प्राचीन अवलोकन प्रदान करता है और उन मूल्यों को समझने का प्रयास करता है जो प्राचीन ग्रंथों एवं शास्त्रों में विशिष्ट रूप से जल के लिए निर्धारित किए गए हैं जो वर्तमान संदर्भों में जल प्रबंधन में चुनौतियों का विस्तार से वर्णन करते हैं और बेहतर जल प्रबंधन के लिए भविष्य के विकल्पों का सुझाव देते हैं।

परिचयः हमारे ऋग्वैदिक पूर्वज सभी प्राकृतिक तत्वों के संबंध में अपने पूर्ववर्तियों से अधिक भिन्न नहीं थे। ऋग्वेद में जल का स्वरूप स्थलीय और आकाशीय दोनों ही थे। जल का छोड़ा जाना, भोर का होना या प्रकाश का उदय होना एक साथ होनेवाली घटनाओं के रूप में वर्णित हैं। वास्तव में जल का बहाव और प्रकाश की किरणों का प्रसार एक ही स्रोत से हुआ और दोनों ने ही एक साथ 'रीता' के मार्ग का अनुसरण किया। ऋग्वेद में जल के देवताओं के कई गुण हैं। ऋग्वेद के चार सूक्तों में जल के देवता 'अपस' को संबोधित किया गया है। ग्रंथों में इंद्र, वरुण, परजन्य का

मुख्य अभियंता (दक्षिण)

भी जल से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंध बताया गया है। परजन्य जिसके नाम का अर्थ ”बादल है जो बारिश“ करता हैं, बारिश के रूप में जल का प्रतिनिधित्व करता है जो पृथ्वी पर जीवन का निर्वाहक है। इसलिए परजन्य को ऋग्वेद में देवता बताया गया है। जल को प्रधान तत्व कहा जाता है तथा आज भी भारत में दैनिक जीवन में पवित्र नदियों में मूर्तियों और बर्तनों को विसर्जित करना और जल से स्वयं का अभिषेक करना एक आम बात है। यही कारण है कि भारत में बहुत से लोग गुजर जाने के बाद भी वापस जल में मिला दिए जाते हैं। यह सब मूल की ओर लौटने के माध्यम से शुद्धीकरण का प्रतीक है। इस लेख में हम देखेंगे प्राचीन मानव ने पानी को आध्यात्मिक दृष्टि से कैसे देखा और वैदिक दृष्टि से जल का प्राचीन साहित्य जैसे उपनिषद, महाभारत या गीता में क्या महत्व था। ऋग्वेद में जल एक असाधारण और सर्वव्यापी तत्व था। यह जीवन का पालनकर्ता और जीवित या मृत प्रत्येक चीज का उद्धारकर्ता था। न केवल ऋग्वेद बल्कि उससे पहले प्राचीन विश्व के समाजों ने भी जल के लिए आध्यात्मिक पूजा का अभ्यास किया।

लेख निम्नलिखित अनुच्छेदों में जलप्रबंधन के एक प्राचीन अवलोकन पर प्रकाश डालता है।

ऋग्वेद में जल की अवधारणा

'अपाह' जल की अवधारणा के अनुसार जल जीवन के सभी रूपों के लिए आवश्यक है। ऋग्वेद के अनुसार जल मानव पर्यावरण का एक भाग है जिसके पाँच स्वरूप हैंः 1. वर्षा जल (दिव्य) 2. प्राकृतिक झरना (स्रवंती) 3. कुएं एवं नहरें (खानित्रिमा) 4. झीलें (स्वयंजाह) 5. नदियां (समुद्रार्थ)। तैत्तिरीय, अरण्यका, यजुर्वेद और अथर्ववेद में पानी के कुछ अन्य वर्गीकरण भी हैं,पेयजल, औषधीय जल, स्थिर जल आदि। छांदोग्य उपनिषद में जल के गुणों के बारे में बताया गया है कि 'जल आनंद और स्वस्थ जीवन जीने का स्रोत है। यह सभी जैविक प्राणियों जैसे दृ वनस्पति, कीड़े–मकोड़े, पशु–पक्षी और मनुष्यों का तात्कालिक कारण है। पर्वत, पृथ्वी, वायुमंडल और आकाशीय पिंड भी जल के 'ठोस रूप' हैं।' जल समुद्र से आकाश तक पहुचता है और आकाश से पृथ्वी पर वापस आता है। वर्षा जल की महिमा अपार है। वर्षा के बादलों को भगवान 'परजन्य' के रूप में दर्शाया जाता है।

ऋग्वेद के अनुसार इस धरती पर सभी जीवन की उत्पत्ति अपाह (जल) से हुई है। इस धरती पर सभी जीवों के लिए जल को बुनियादी जरूरत माना जाता है। वैदिक साहित्य में जल के औषधीय गुणों,जल के प्रयोग, जल के रक्षण एवं संरक्षण के महत्व के बारे में प्रचुर संदर्भ हैं। शुद्ध जल को उसकेनिम्नलिखित गुणों यथा दृ शीतम (ठंडा), शुचि (स्वच्छ), शिवम (आवश्यक खनिज एवं तत्वों से परिपूर्ण),ईस्ठम (पारदर्शी), विमलम लहु संदगुणम् (अम्ल–क्षार संतुलन सामान्य सीमा से अधिक नहीं) के कारणइसे 'दिव्य जल' कहा जाता है।

जब जल को बहाव के लिए मुक्त किया गया तो उसे वृत्र की हत्या के बाद इंद्र के ऊपर की ओर जाने की घटना के रूप में वर्णित किया गया था। दिग्गज प्रकाशमान भी उनके साथ चले गए। जल के नीचे की ओर के बहाव का वर्णन टप्प्.69.11 में किया गया है, जहाँ सात नदियाँ वरुण के जबड़ों में खाई या समुद्र के रूप में बहती हैं। ऋग्वेद में कई देवताओं को जल का जिम्मेदार ठहराया गया है। अपस, जिन्हें चार सूक्तों में संबोधित किया गया है, जल के देवता हैं। अन्य देवता भी हैं, जो अपने स्वयं के स्वतंत्र विभागों के अलावा किसी न किसी प्रकार के जल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित हैं। उनमें इंद्र, वरुण, परजन्य आदि शामिल हैं। अपाह या जल के देवता वैदिक संस्कृत शब्द अप (च) जल के लिए है।

यासु राजा वरुणो यासु समो विश्वै देवा यासुराजम मदांति।

वैश्वनारो यस्वाग्निः प्रविष्टस्त अपो देविरिह ममवंतु।

वह जल जिसमें राजा वरुण निवास करते हैं, वह जल जिसमें सोम रहता है, जिससे सभी देवता प्राण पोषक शक्ति ग्रहण करते हैं, जिस जल में सर्व–अग्नि के देवता प्रवेश करते हैं, जो दिव्य मूल्यों से भरे हुए हैं, दुनिया में मेरी मदद करते हैं। इस प्रकार, अपाह वह देवता है, जो अनन्य रूप से जल का देवता है। लेकिन ऋग्वेद में अन्य देवता भी हैं, जो अन्य कर्तव्यों के अलावा, किसी न किसी तरह से इस 'पंचभूत' में से एक से संबंधित हैं। जल को दुनिया के निर्माण का आधार बनाया गया था, क्योंकि कोई भी जीवन इसके बिना नहीं रह सकता, इसे ऋग्वेद में प्रमुख बिंदु बनाया गया। ऋग्वेद के सबसे बड़े देवता इंद्र सहित सभी प्रमुख देवता किसी न किसी तरह से जल से जुड़े हुए हैं। यदि एक जल (इंद्र) का मुक्तिदाता है तो दुसरा उसका नियामक (वरुण) है। परजन्य, मरूत और मरुदगन की पूजा जल से संबंधित उनके कार्यों के लिए की जाती है। मित्रावरुण और सूर्य जल के देवता अपस के साथी हैं। वे अग्नि के निर्माता भी हैं। ऋग्वेद के पवित्र पेय 'सोम' का भी स्रोत जल में है। इस प्रकार जल ब्रह्मांड का और मानव जीवन का प्रारंभिक एवं अंतिम केंद्र हैं। जल की प्रकृति के बारे में प्राचीन ऋषियों की अंतर्दृष्टि के साथ समापन करना उपयुक्त हैः

प्राचीन ग्रंथों में पवित्र जल

वेदों में, प्रकृति के पाँच मूल तत्वों में जल को सर्वोच्चम स्थान प्राप्त है। चारों वेदों में, जल को जीवनदायी गुण के कारण पूजा के योग्य एक भगवान के रूप में देखा जाता है। ऋग्वेद में जल की स्तुति में कई श्लोक हैं।जल को आत्म–जागरूकता के अवतार के रूप में भी देखा जाता है। इसके अलावा, जल को जीवन के स्रोत, पृथ्वी और पर्यावरण का रक्षक, शहद, समृद्धि का जनक, पापों का उद्धारक और अमृत के रूप में जाना जाता है। जल को पहला महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है जिसने ब्रह्मांड को विकसित किया। यजुर्वेद में जल के बारे में कहा गया कि 'पृथ्वी अपनी कक्षा में अपनी मातृ जल के साथ घूमती है तथा अपने पिता सूर्य की परिक्रमा करती है (यजुर्वेद दृ 3/6)। ऋग्वेद कहता है, इस ग्रह पर सभी जीवों की उत्पत्ति जल से हुई है और जल इस धरती के सभी जीवित प्राणियों की एक बुनियादी जरूरत है। शीतम (स्पर्श में ठंडा), शुचि (स्वच्छ), शिवम (उपयोगी खनिजों एवं तत्वों से भरपूर),ईस्ठम (पारदर्शी), विमलम लहु शद्गुणम (अम्ल–क्षार संतुलन सामान्य सीमा से अधिक नहीं) दृ ये गुण पानी को 'दिव्यजल' के रूप में दर्शाते हैं। इसके अलावा जल को अमृत, शुद्ध, दोषरहित, वर्षा करने वाले के रूप में देखा जाता है जो पृथ्वी के मधुर–सार के रूप में पूजनीय है और जिसे भक्तों ने इन्द्र के पहले पेय के रूप में प्रतिष्ठित किया है (ऋग्वेद 7.47.1)। जल को सर्व–व्यापक वायु और स्थानीयकृत पृथ्वी के बीच एक मध्यवर्ती घटक के रूप में भी जाना जाता है। अग्नि वैश्वनरा सार्वभौमिक भगवान है, जिन्होंने जल की आत्मा और ह्रदय में प्रवेश किया है, इसलिए उन्हें जीवन और जागरूकता के रूप में माना जाता है। कुओं, नालों, झीलों, बारिशों, नदियों और महासागरों की पूजा की जाती है (तैत्तिरीय संहिता दृ 7.4.13)। इसी प्रकार तैत्तिरीय उपनिषद (11–प) में कहा गया है कि वास्तव में स्वयं से अंतरिक्ष उत्पन्न हुआ, अंतरिक्षसे वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से जड़ी–बूटियाँ,जड़ी–बूटियों से भोजन, भोजनसे वीर्य, वीर्य से व्यक्ति उत्पन्न हुआ। जल से पृथ्वी का निर्माण हुआ यथा दृ पानी से ब्रह्मांड की भ्रूण अवस्था का जन्म हुआ। छांदोग्य उपनिषद (7.10.1) कहता है कि यह जल है जो हर चीज में व्याप्त है, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, पृथ्वी, वातावरण, स्वर्ग, पर्वत, देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी, घास, पौधे, कुत्ते, कीड़े–मकोड़े, चीटियाँ आदि।

जल की दिव्यता

ऋग्वेद में कई देवता थे जो पानी से जुड़े थे। इनमें अपस, इंद्र, वरुण, परजन्य आदि प्रमुख थे। अपस के रूप में जल को माता माना गया है वही दूसरे रूप में एक स्त्री वर्णित किया गया है। वहीं एक और जगह इसे स्वामी भगवान के रूप में संबोधित किया गया है, जो "देवताओं"का पालन करने और यज्ञ करने वालों को आशीर्वाद देते हैं। यहाँ वज्र के वाहक इंद्र को पानी का मार्ग बताने का श्रेय दिया जाता हैः

समुद्रज्योष्ठ सैलस्य मध्यपुला यंत्यानिविश्मना : इंद्रः या बाजरी ब्रह्मो रशद तपोआ देवरिहि ममवंतु दृ वह जिसकी मंजिल समुद्र है, जो दुनिया को पवित्र करता है, जो हमेशा बहता रहता है, ऐसा जल ब्रह्मांड के बीचमें रहता है। वज्र धारण करनेवाले और इच्छाओं की वर्षा करने वाले इंद्र ने इस दिव्य जल के लिए एक मार्ग खोल दिया है । यह जल मेरी सहायता करें और मुझे प्राप्त हो।

जल का द्वैत

ऋग्वेद जल पर दोहरा नियंत्रण प्रदान करता है, इसलिए इंद्र को सबसे महान देवता और जल का मुक्तिदाता कहा जाता है, जबकि वरुण को धरती पर जल का सर्वोपरि भगवान माना जाता है दृ यथा, समुद्र,नदियाँ, तालाब के साथ–साथ भूजल भी। वरुण को बारिश को कमोवेश करने के साथ ऐसे सभी जलों के नियामक की भूमिका सौंपी गई है।

जल विज्ञान चक्र

प्राचीन भारतीय साहित्य में जलविज्ञान एवं उसके अध्ययन के अनेक संदर्भ मिलते हैं जो बताते हैं कि वेलोग जलविज्ञानी प्रक्रिया एवं उसके मापन की मूल अवधारणाओं को जानते थे। आधुनिक जलविज्ञान कि अनेक अवधारणाएं वेदों, पुराणों, मेघमाला, महाभारत, मयुर चित्रका, ब्रह्म संहिता के पदों एवं अन्य प्राचीन भारत की कृतियों में बिखरे हुए हैं। 3000 वर्षों से अधिक पुराने वैदिक ग्रन्थों में भी जलविज्ञान चक्र के मूल्यवान संदर्भ उपलब्ध हैं। वेदों के विभिन्न छंद जो भजन एवं प्रार्थनाओं के रूप में देवताओं को संबोधित हैं, उनमें जलविज्ञान

के आधुनिक विज्ञान की स्थापना से संबंधित महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैं। इसी तरह, अन्य दूसरे संस्कृत साहित्य में भी जलविज्ञान से संबंधित मूल्यवान विमर्श हैं।

अतिस्थातीनम् विवेशनानाम् काश्थानाम मध्येय निहितम शरीरम्

बरतरस्य निद्यम वि वरंत्यापो दीर्घतम् आशायदिन द्रशाव्रुहा॥

श्लोक 1,32,10 के अनुसार जल कभी स्थिर नहीं रहता है,यह लगातार वाष्पित होता है,लेकिन जल के कणों कि सूक्ष्मता के कारण हम इसे नहीं देख सकते। वराहमिहिर की ब्रतसंहिता (550 ए.डी.) के तीन अध्याय जल मौसम विज्ञान को समर्पित हैं, जिनमें बादलों की गर्भावस्था (अध्याय दृ 21), हवा की गर्भावस्था (अध्याय दृ 22) और वर्षा की मात्रा (अध्याय दृ 23) शामिल हैं। डकारगेलम के श्लोक 1 एवं 2 (ब्रह्म संहिता अध्याय दृ 54) में भूजल विज्ञान के अन्वेषण के महत्व को बताया गया है जो मनुष्य को जल के अस्तित्व को सुनिश्चित करने में मदद करता है। ये निम्नानुसार हैः

धर्मयाम् यशश्यम व वादाभयतोहम डकारगलम येन जालोप्लाबधिना ॥

पुनसम यथागदेषु शिरास्तथैव छितवायी प्रोन्नतनिन्ना संस्था ॥

एकायना वरदायना रसायना चम्भच्युतम्नमस्तो वसुधा विषयाशांत ॥

नाना रस्तवम बहुवर्नातम च गतम परीक्ष्याम छितितुल्यमराव ॥

पृथ्वी के नीचे जल की धाराएँ मानव शरीर में शिराओं की तरह है, कुछ ऊंची और कुछ नीची। पृथ्वी की प्रकृति में अंतर से आकाश से गिरता पानी विभिन्न रंगों और स्वादों को ग्रहण करता है। लिंगपुराण में एक पूरा अध्याय (1.36) जल विज्ञान के लिए समर्पित किया गया है। इसमें वैज्ञानिक रूप सेउपयुक्त उदाहरणों द्वारा वाष्पीकरण, संघनन, वर्षा की व्याख्या की गई है और यह बताया गया है कि जल को नष्ट नहीं किया जा सकता, केवल इसकी स्थिति बदली जाती है।

दन्धयामनयशु चराचयशु गोधूमभूतोस्तवभा निश्क्रमंती ॥

या या ऊर्ध्वा मस्तेनायरिता वाल तस्तत्वभम्यग्निवायुच ॥

अतो धूमग्निवतनम् संयोगस्तवमुच्यते ॥

वारीणि वर्षतीत्यभ्रमभ्रस्येशाः साहस्राद्रक ॥

अर्थात पृथ्वी पर अधिकांश पदार्थों में निहित पानी सूर्य की गर्मी से वाष्प में परिवर्तित होकर हवा के साथ आकाश में चला जाता है और बाद में बादलों में परिवर्तित हो जाता है, इस प्रकार धुंआ, आग और हवा के संयोजन से बादल बनते हैं। ये बादल भगवान इन्द्र, जो हजार आँखों वाले हैं, के मार्गदर्शन में वर्षा का कारण बनते हैं। वायु (51.14—15—16) इस प्रकार कहता हैः

आदित्यपातितम् सूर्यगणेश सोमम् संक्रमत्य जलम्॥

नदीभिर्वयुयुक्तभिलेकिढनम प्रवर्तम॥

यत्सोमस्त्रवसत्य सूर्य तद्भयश्ववतिरथत॥

मेघा वायुनिघातैन विसर्जन्त जलम् भुवी ॥

एवमूतिक्षपयत चैव पततय चाम पुनर्जलम्॥

नश्मु उदकास्यस्ति तदैव परिवर्तत्य॥

अर्थात सूर्य द्वारा वाष्पित जल वायु की कोशिकाओं की मदद से वायुमंडल में ऊपर उठता है और वहाँ ठंडा और संघनित हो जाता है। बादलों के बनने के बाद हवा के बल से वर्षा होती है। इस प्रकार इन प्रक्रियाओं में पानी खो जाता है, लेकिन, लगातार एक रूप से दूसरे रूप में बदलता रहता है। (ऋग्वेद श्लोक 1,27,61,328)

विभक्तसि चित्रभानो सिंधोंरूर्मा उपक आ सगहो दश्युश्य छारसी॥

नदम ना भिन्नमुय शयानम मानो रूहाना अतिमयंतयापह यशचिद्वत्र महिना पर्यातिश्थत्तसमहिह पतसुताह शिर्वभुव॥

यह श्लोक बताता है कि सूर्य की किरणों की गर्मी से हवा के साथ आकाश में जानेवाला सारा जल बादलों में परिवर्तित हो जाता है और फिर सूर्य की किरणों के प्रवेश के बाद बारिश होती है और नदियों, तालाबों, समुद्र आदि में पानी जमा हो जाता है। दो छंदों (ट,54,2 एवं ट,55,5) में मेघमयी हवाओं की व्याख्या वर्षा के कारण के रूप में की गई है।

प्रा वो मारुतस्तस्तविशा उडनयावो वयोवृद्धो अश्वयूजाह परिजयाह॥

सन विघुत दधातिवशाति तृताह स्वर्णतयापोहवना परिजयाह॥

उदीरयथा मारूतह समुद्रातो युवम् वृष्टिम वर्षयाथा पूरीशीदम॥

न वो दस्तरा अप दस्यंति धनयवाह शुभम यातमानु रथ अवरतस्त॥

जल मौसम विज्ञान

वैदिक युग में भारतीयों ने यह अवधारणा विकसित की थी कि सूर्य की किरणों और हवा के प्रभाव से पानी सूक्ष्म कणों में विभाजित हो जाता है। पुराण में विभिन्न स्थानों पर कहा गया है कि जल को न तो बनाया जा सकता है और न ही नष्ट किया जा सकता है,जल चक्र के विभिन्न चरणों में केवल इसकी अवस्था बदली जाती है। वैदिक काल में भारत में जल के वाष्पीकरण, संघनन, मेघ–निर्माण, वर्षा और उसके मापन को भलीभाँति समझा गया था। भारत में ईसापूर्व 10वी शताब्दी से पहले भी यज्ञों, वनों, जलाशयों आदि का वर्षा पर प्रभाव; बादलों का वर्गीकरण, उनका रंग, वर्षा क्षमता आदि; प्राकृतिक घटनाओं जैसे आकाश का रंग, बादल, हवा की दिशा, बिजली और जानवरों की गतिविधियाँ के आधार पर वर्षा का पूर्वानुमान, ये सभी चीजें अच्छी तरह विकसित थी। कौटिल्य (ईसापूर्व चौथी शताब्दी) के समय में वर्षा के मापन पद्धति को विकसित किया गया था, जिसमें आधुनिक जल विज्ञान के समान सिद्धांत थे, सिवाय इसके कि वर्षा कि आधुनिक गहराई मॅप वकी जगह द्रोण के वजन माप को अपनाया गया था।

वैदिक युग में मानसूनी हवाओं और बादलों की ऊंचाई के साथ–साथ वायुमंडल के विभाजन का ज्ञान अच्छी तरह से विकसित था। ”हे बादल वाली हवा, आपके सैनिक पानी से समृद्ध है, वे जीवन को मजबूत बनाते हैं, और आपके मजबूत बंधन हैं, वे पानी बहाते हैं और भोजन बढ़ाते हैं, और लहरों से घिरे होते हैं, जो दूर–दूर तक फैलते हैं । बिजली के साथ हवा और बादल कि तिकड़ी जोर गर्जना करता है और पानी पृथ्वी पर गिरता है”। कौटिल्य (ईसापूर्व चौथी शताब्दी) के समय तक भारतीयों ने वर्षा मापने की विधि विकसित कर ली थी। इस वर्षामापी को वर्षामान के नाम से जाना जाता था। कौटिल्य ने इन शब्दों में इसके निर्माण का वर्णन किया है ”भंडार गृह के सामने एक कुंड जिसका मुँह आरतनी (18 इंच) जितना चौड़ा हो वर्षामापी के रूप में स्थापित किया जाएगा” (अर्थशास्त्र, पुस्तक दृ 11, अध्याय दृट)। कौटिल्य विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा के वितरण से परिचित थे। वे आंकड़ों के साथ उसका बहुत ही वैज्ञानिक एवं सटीक विवरण प्रस्तुत करते हैं दृ जंगल (रेगिस्तानी देशों) में बारिश की मात्रा 16 द्रोण है (4 अदक = 1 द्रोण और एक अदक लगभग 7 पॉउंड, 11 औस के बराबर),जो कि नम देशों का आधा है (वे देश जो कृषि के लिए उपयुक्त हैं), अस्माका (महाराष्ट्र) के देशों में 13.5 द्रोण, अवंती में 23 द्रोण और पश्चिमी देशों, हिमालय की सीमा और उन देशों में जहां कृषि में जल चैनलों का उपयोग किया जाता है, में भारी मात्रा में। इससे यह स्पष्ट होता है कि कौटिल्य द्वारा दी गई वर्षा की माप की पद्धति की वही भावना है जो आज हमारे पास है, अंतर केवल इतना है कि वे इसे वजन माप में व्यक्त करते हैं, जबकि हम आजकल एक रैखिक माप का उपयोग करते हैं (अर्थ, अध्याय दृग्प्ट, बुक दृ 11, पृ दृ 130)।

आगे बारिश के भौगोलिक विवरण की चर्चा करते हुए वह देखते हैं कि ”यदि आवश्यकता की एक तिहाई वर्षा शुरू और आखिर के महीनों के दौरान और दो तिहाई वर्षा बीच में होती है तो उसे सामान्य माना जाता है”। यहाँ तक कि बादलों के वर्गीकरण और वर्षा और कृषि के अंतसबंध पर चर्चा करते हुए प्रख्यात लेखक कहते हैं कि कुछ ऐसे बादल हैं जो लगातार सात दिनों तक बारिश करते है; अस्सी ऐसे भी हैं जो महीन बूंदे डालते हैं और

साठ वे हैं जो धूप में बरसते हैं। जब वर्षा हवा से मुक्त और धूप से अमिश्रित होती है तब खेतों की जूताई संभव होती है और अच्छी फसल की पैदावार निश्चित हो जाती है।

वराहमिहिर के वृहत् संहिता और मयूरचित्रक दो अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं जो जलवायु और मौसम संबंधी जानकारी से परिपूर्ण है, हालांकि उनमें प्रचुर मात्रा में ज्योतिष अनुमान हैं, किंतु पर्याप्त वैज्ञानिक तथ्य भी हैं। वृहत् संहिता में तीन अध्याय हैं (21,22 एवं 23) जो जलवायु विज्ञान एवं मौसम विज्ञान पर केन्द्रित हैं। जैनियों ने मौसम विज्ञान के क्षेत्र में पर्याप्त कार्य किया है। 'प्रजनापन' और 'आवश्यक कर्निस' विभिन्न प्रकार की हवाओं का उत्कृष्ट अध्ययन प्रदान करते हैं। यह परम्परा इन ग्रन्थों से अधिक पुरानी रही होगी। 'प्रजनापन' बर्फवारी और ओलावृष्टि का संदर्भ देता है। नेमिचंद्र का 'त्रिलोकसार' बताता है कि सात प्रकार के आवधिक बादल होते हैं। वे बरसात के मौसम में सात–सात दिनों तक बारिश करते हैं। फिर सफेद बादलों की बारह प्रजातियाँ होती हैं। वे भी सात–सात दिनों के लिए बारिश लाती हैं। इस प्रकार वर्षा का मौसम कुल मिलाकर 133 दिनों तक बढ़ जाता है।

जल का आनुष्ठानिक प्रयोग

वैदिक आर्यन काल से सभी समारोहों में एक धार्मिक स्वर होता था और प्रत्येक समारोह में स्वच्छता के उच्च स्तर की माँग की जाती थी। स्वच्छता के इस उच्च स्तर को पानी के उदार उपयोग द्वारा प्राप्त किया गया था, यह समारोह के पूर्व स्नान एवं पूरे क्षेत्र की सफाई और बर्तनों की स्वच्छता दोनों ही रूपों में था। स्वच्छता की इच्छा इस विश्वास से पैदा हुई कि जल में आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने की शक्ति है। इसलिए आम तौर पर सभी पवित्र स्थान नदियों के किनारे, समुद्र तटों, और कुछ मामलों में पहाड़ों पर स्थित थे। नदियों के संगम का विशेष महत्व था और वे विशेष रूप से पवित्र थी। आज गंगा को हिंदुओं के लिए सभी नदियों में सबसे पवित्र माना जाता है। कहा जाता है कि कुंभ मेले के दौरान पवित्र नदियों में स्नान करने वालों को पाप से मुक्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। गंगा एवं अन्य नदियों को श्रद्धा का दर्जा प्राप्त होने के कारणों को खोजना मुश्किल नहीं है। प्राचीन हिंदू जब एक बार नदियों के किनारे बस गए, तब वे पानी के महत्व को समझ गए। हर साल गंगा हिमालय से बहने वाले जल के साथ प्रफुल्लित होती है, मैदानी इलाकों और उसके पेड़ों–फसलों में जीवन भरती है। नियत समय में पानी, विशेष रूप से गंगा का, देवत्व की शक्तियाँ से जुड़ा था और समारोहों में उपयोग किया जाता था। दूधऔर पानी को उर्वरता का प्रतीक माना जाता था और यहाँ तक कि मंदिर के तलाबों को भी पवित्र मानाजाने लगा, जिनमें स्वच्छता के गुण होते थे।

कर्मकांडीजल

जल का प्रयोग केवल बर्तनों की सफाई एवं स्नान में ही नहीं होता था बल्कि देवताओं के आनुष्ठानिक स्नान में भी किया जाता था। देवताओं को अर्पित किया जाने वाला जल भक्तों के बीच में 'थीर्थ' के रूप में वितरित किया जाता था। पूर्ण कुंभ में घड़े के जल को दिव्य प्रकृति का माना जाता था।

तर्पण भी देवताओं को प्रसन्न करने या प्रसन्न करने के लिए बनाए गए त्योहारों में से एक था। इस अनुष्ठान में पवित्र घास का उपयोग करते हुए हाथों से पानी डालते हैं । यह अनुष्ठान देवताओं, पूर्वजों और ऋषियों को प्रसन्न करने और धन्यवाद देने का संकेत देता है। पानी का उपयोग न केवल देवताओं को चढ़ाए जाने वाले चढ़ावे को शुद्ध करने के लिए किया जाता है, बल्कि सभी वस्तुओं को शुद्ध करने के लिए किया जाता है। तर्पण का अभ्यास एक हिंदू द्वारा भोजन करने के लिए भी किया जाता है, जब वह पत्तल या थाली के चारों ओर खाने से पहले पानी छिड़कता है, जिसमें वह अपना भोजन करता है ।

i) राज्याभिषेक के दौरान भी राजा को शुद्ध करने के लिए जल का छिड़काव किया जाता है और यह कार्य यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता कि उसके शासन की शुभ शुरुआत होगी।

ii) संध्या (संध्योपासना या संध्यावंदना) नामक एक अनुष्ठान है जिसमें ध्यान एवं एकाग्रता संयोजित किया जाता है । यह आत्म–शुद्धि और आत्म–सुधार के लिए दैनिक रूप से किया जानेवाला कर्तव्य है। संध्यावंदना भक्ति एवं निष्ठा उत्पन्न करने के अलावा शुद्धिकरण का कार्य भी करती है।

iii) इसमें आचमन या पानी का आनुष्ठानिक घूंट लगाना शामिल है। नित्य क्रिया से निवृत होने, गलियों में चलने, भोजन करने से ठीक पहले और भोजन के बाद एवं स्नान के बाद आचमन करना शुद्धि करता है।

iv) सूर्य अर्ध्य या सूर्य अथवा सूर्य भगवान को जल का तर्पण । समारोह के अन्य दो तत्व जिनमें जल का उपयोग नहीं था, वे थे प्राणायाम (भटकते मन को स्थिर करने के लिए साँस का नियंत्रण) और गायत्री एवं उपास्थना का मौन पाठ अर्थात धार्मिक आज्ञाकारिता।

v) अर्ध्य के पहले भाग में जल और उसके लाभों को संबोधित भजन शामिल थे, जबकि चेहरे और सिर पर जल के छिड़काव के साथ–साथ विभिन्न अंगों को गीली ऊंगलियों से छूना उन भागों को शुद्ध करने और उन पर संबंधित देवताओं का आह्वान करने के लिए है। यह विभिन्न तंत्रिका केन्द्रों को उत्तेजित करता है और शरीर की निष्क्रिय शक्तियों को भी जगाता है। अर्ध्यउन राक्षसों को भगाने के लिए है जो उगते सूरज के मार्ग में बाधा डालते है। जब कि सूर्य बुद्धि है, राक्षस काम, क्रोध और लोभ की बुराई।

vi) जल के अन्य अनुष्ठान भी हैं जैसे कि जलांजलि, देवताओं को अंजुलि भर जल अर्पित करना, जलाधिवासम या जल में डुबकी लगाना और जलस्थापनाम के साथ–साथ जलाभिषेकम का शुद्धिकरण समारोह।

vii) इसी तरह, कुछ इच्छाओं की प्राप्ति हेतु पवित्र जल में किया जाने वाला स्नान काम्यासनम है, जबकि स्नान करना संभव न होने पर शुद्ध करने के लिए किसी के शरीर पर जल का छिड़काव 'प्रोक्षण' है। इसके अलावा बच्चे के जन्म के बाद उसके एक करीबी रिश्तेदार द्वारा बच्चे के शरीर पर जल के कुछ बूंदों को डालकर 'नीरतालिक्कुका' किया जाता है।

वैदिक युग में जलशास्त्र की तकनीकें

जलशास्त्र की तीन विद्या या तकनीकें हैं दृ पानी का भंडारण–स्तंभन, जलापूर्ति/वितरण दृ संचेतन,जल–निकासी–समहरण।

क) जल निकायों का रखरखाव

वापीकुपतडागेषु देवतायतनेषु च॥

जीर्णान्युद्धरते यस्तु पुण्यमष्टगुंण भवेत॥ (111011 वस्तुरत्नाकर अध्याय दृ 2)

ख) क्ुएं के जल का उपचार

अर्जुनमुस्तोशीरेः सराजकोशामलकचूणै॥

कनकफलसमायुक्तैर्योगः कूपे प्रदतन्यः॥ (1112111 वराहसंहिता अध्याय दृ 54)

ग) वर्षा की भविष्यवाणी की पद्धतियाँ

वर्षात्रिभाग पूर्वपश्चिम मासयोः दौत्रिभागौ मध्यमयोः॥

सुषमारूपा तस्योपद्धिर्वृहरूपनेः सनिगमन गर्भाधानेम्यः॥ (कौटिल्य अर्थशास्त्र)

घ) विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा की मात्रा

द्रोणाष्टाशाम्यधिके वृष्ठोगर्भस्त्रुतो भवति॥ (121 कौटिल्य)

ङ) भू–पृष्ठ जल

प्राचीन काल में भारत में जल के कुशल प्रयोग, नहरों का अस्तर, बांधों एवं टैंकों का निर्माण, अच्छे टैंकों के निर्माण के लिए अपरिहार्य आवश्यकताएँ, किनारों की सुरक्षा विधियाँ, स्पिलवे और अन्य छोटे पहलुओं पर पर्याप्त ध्यान दिया गया था। कौटिल्य के समय में सुव्यव्यस्थित जल मूल्य निर्धारण प्रणाली प्रचलित थी। वेदों में जल के कुशल उपयोग के महत्व पर बल देते हुए विभिन्न संदर्भ उपलब्ध हैं, ताकि पानी की कमी और सूखे की तीव्रता को कम किया जा सके।

महाभारत के श्लोक (184.15–17) में कहा गया है कि पौधे अपनी जड़ों से पानी पीते हैं। पौधों द्वारा जलग्रहण की क्रियाविधि को एक पाइप के माध्यम से जल के ऊपर उठने के उदाहरण द्वारा समझाया गया है। यह कहा जाता है कि जलग्रहण प्रक्रिया वायु के संयोग से सुगम होती हैं। इससे जल की गति में मिट्टी की

कोशिका क्रिया एवं पौधे के उत्कर्ष–अपकर्ष का स्पष्ट रूप से पता चलता है। अथर्ववेद के दो मंत्रों में कहा गया है कि यदि जलस्रोत पहाड़ों पर है तो बनने वाली नदी बारहमासी होगी और उच्चगति के साथ बहेगी (।.ट.1, 15. 3) एवं (।.ट.11, 3.1)। इसी प्रकार श्लोक (11,3.1) में भी यही तथ्य प्रकट होता है की बर्फ से ढंके पहाड़ों से निकलने वाली नदियाँ गर्मियों में भी बहती रहेगी।

च) **भूजल**

लोगों ने एक बहती नदी के माध्यम से किसी क्षेत्र के ढलान को जानने की तकनीक भी विकसित की जिसमें स्थान, गर्म एवं ठंढे झरने, कुओं के माध्यम से भूजल उपयोग, कुओं के निर्माण के तरीकों एवं उपकरणों के साथ जल स्तर की ऊंचाई में स्थान के साथ भिन्नता के बारे में वृहत् संहिता (डकारगला) के 54 वें अध्याय में विस्तार से बताया गया है। सूर्य की किरणें, हवा, नमी,वनस्पति आदि वाष्पीकरण के प्रमुख कारण के रूप में पहचाने गए थे।

विष्णुपुराण (द्वितीय, 5.3) ने भूमिगत क्षेत्र की मिट्टी को सात श्रेणियों में वर्गीकृत किया है दृप)काली पप)सफेद या पीली–सी पपप)नीली या लाल पअ)पीली अ)बजरी अप)पहाड़ी या बोल्डर अपप)सुनहरा रंग। भूजल की परिघटना के बारे में कहा जाता है कि यदि जंबू के पेड़ के पूर्व में एक दीमक का टीला है तो पेड़ के दक्षिण में तीन हाथ की दूरी पर दो पुरुषों की गहराई के बराबर पर लंबे समय तक पर्याप्त मीठा जल मिलेगा (वृ.स. 54. 9)। इसी तरह अर्जुन पेड़ के उत्तर में दीमक का टीला होने पर उसके पश्चिम में तीन हाथ पर साढ़े तीन पुरुषों की गहराई में जल मिलेगा।

छ) **जल का शुद्धीकरण**

यह जानना दिलचस्प है कि वराहमिहिर ने 550 ई. की शुरुआत में दूषित जल स्रोत से पीने योग्य पानी प्राप्त करने के लिए एक सरल विधि प्रस्तुत की। सौरताप, वातन, आग से गर्म पत्थरों, सोना, चाँदी, बालू, के साथ–साथ विभिन्न पौधों की सामग्री का इस उद्देश्य के लिए सुझाव दिया था। साल के महीनों के साथ जल की गुणवत्ता में परिवर्तन और कई स्रोतों से विभिन्न उपयोगों के लिए जल की उपयुक्तता का वर्णन किया गया था।

ज) **सुरक्षा एवं संरक्षण**

वेदों एवं उपनिषदों में जल की सुरक्षा, उसका संरक्षण एवं विवेकपूर्ण उपयोग का वर्णन अच्छी तरह से किया गया है। प्राचीन आचार्यों ने आनेवाली पीढ़ियों को ध्यान में रखकर जल संरक्षण को विनिर्दिष्ट किया है। पौधे और पानी आगामी पीढ़ीयों के लिए खजाना हैं (ऋग्वेद दृ संहिता अपप 70–4)। जल और जड़ी–बूटियों में कोई ज़हर नहीं होना चाहिए (ऋग्वेद संहिता अप 39–5)। जल को मलिनता से मुक्त किया जाना है (ए.वी संहिता ग 5–24)। पर्यावरण की सुरक्षा का पृथ्वी और स्वर्ग (वायुमंडल) की सुरक्षा से घनिष्ठ संबंध था। वैदिक काल के दौरान ऋषियों ने प्रकृति के सभी घटकों के कामकाज में आवश्यक संतुलन बनाए रखने के लिए प्रार्थना की दृ यथा दृ पहाड़ों, झीलों, स्वर्ग, पृथ्वी, जंगल और आकाश स्थित जल आदि। जनता जीवन को बनाए रखने वाले जल का विवेकपूर्ण एवं श्रद्धापूर्वक उपयोग करे तथा उसे विरासती परिप्रेक्ष्य में समझे। जनता के बीच जल के लिए सम्मान पैदा करना जल प्रदूषण को कम करने में एक नियामक उपाय था । जल को उसके विभिन्न रूपों में दिव्य और आनंदमय माना जाता था।

निष्कर्ष

जल ज्ञान में प्रचुर मात्रा में चित्र, अनुष्ठान सांस्कृति प्रथाएँ, रूपक आदि ने सामूहिक स्मृति एवं सामुदायिक स्वाभित्व एवं उत्तरदायित्व को दर्शाते हुए एक सांस्कृतिक विरासत का निर्माण किया। यहाँ हम जल पर सांस्कृतिक छवियों का वर्णन करते हैं और जल योद्धाओं के प्राचीन परम्पराओं एवं कार्य द्वारा जल ज्ञान पर पारस्परिक विरासत के मूल्यों की पुष्टि करते हैं। प्राचीन प्रथाएँ भारत को जल प्रज्ञता प्रदान करने के लिए जल ज्ञान पर पारंपरिक विरासत के मूल्यों की पुष्टि करती है। जल को पुनः पवित्र होने दें।

”जल है तो कल है“

सुशील कुमार श्रीवास्तव

”जल है तो कल है“, बावजूद इसके जल बेवजह बर्बाद किया जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल–संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही है। हम हमेशा से सुनते आये हैं ”जल ही जीवन है“। जल के बिना सुनहरे कल की कल्पना नहीं की जा सकती, जीवन के सभी कार्यों का निष्पादन करने के लिये जल की आवश्यकता होती है। पृथ्वी पर उपलब्ध एक बहुमुल्य संसाधन है जल, या यूं कहें कि यही सभी सजीवो के जीने का आधार है जल। धरती का लगभग तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है, किन्तु इसमें से 97ः पानी खारा है जो पीने योग्य नहीं है, पीने योग्य पानी की मात्रा सिर्फ 3ः है। इसमें भी 2ः पानी ग्लेशियर एवं बर्फ के रूप में है। इस प्रकार सही मायने में मात्र 1ः पानी ही मानव के उपयोग हेतु उपलब्ध है।

नगरीकरण और औद्योगिकीरण की तीव्र गति व बढ़ता प्रदूषण तथा जनसंख्या में लगातार वृद्धि के साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती है। जैसे जैसे गर्मी बढ़ रही है देश के कई हिस्सों में पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। प्रतिवर्ष यह समस्या पहले के मुकाबले और बढ़ती जाती है, लेकिन हम हमेशा यही सोचते हैं बस जैसे तैसे गर्मी का सीजन निकाल जाये बारिश आते ही पानी की समस्या दूर हो जायेगी और यह सोचकर जल सरंक्षण के प्रति बेरुखी अपनाये रहते हैं।

आगामी वर्षों में जल संकट की समस्या और अधिक विकराल हो जाएगी, ऐसा मानना है विश्व आर्थिक मंच का। इसी संस्था की रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि दुनियाभर में 75 प्रतिशत से ज्यादा लोग पानी की कमी की संकटों से जूझ रहे हैं। 22 मार्च को मनाया जाने वाला ‘विश्व जल दिवस’ महज औपचारिकता नहीं है, बल्कि जल संरक्षण का संकल्प लेकर अन्य लोगों को इस संदर्भ में जागरुक करने का एक दिन है।

शुद्ध पेयजल की अनुपलब्धता और संबंधित ढेरों समस्याओं को जानने के बावजूद देश की बड़ी आबादी जल संरक्षण के प्रति सचेत नहीं है। जहां लोगों को मुश्किल से पानी मिलता है, वहां लोग जल की महत्ता को समझ रहे हैं, लेकिन जिसे बिना किसी परेशानी के जल मिल रहा है, वे ही बेपरवाह नजर आ रहे हैं। आज भी शहरों में फर्श चमकाने, गाड़ी धोने और गैर–जरुरी कार्यों में पानी को निर्ममतापूर्वक बहाया जाता है।
प्रदूषित जल में आर्सेनिक, लौहांस आदि की मात्रा अधिक होती है, जिसे पीने से तमाम तरह की स्वास्थ्य संबंधी व्याधियां उत्पन्न हो जाती हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अध्ययन के अनुसार दुनिया भर में 86 फीसदी से अधिक बीमारियों का कारण असुरक्षित व दूषित पेयजल है। वर्तमान में करीब 1600 जलीय प्रजातियां जल प्रदूषण के कारण लुप्त होने के कगार पर हैं, जबकि विश्व में करीब 1.10 अरब लोग दूषित पेयजल पीने को मजबूर हैं और साफ पानी के बगैर अपना गुजारा कर रहे हैं।

ऐसी स्थिति सरकार और आम जनता दोनों के लिए चिंता का विषय है। इस दिशा में अगर त्वरित कदम उठाते हुए सार्थक पहल की जाए तो स्थिति बहुत हद तक नियंत्रण में रखी जा सकती है, अन्यथा अगले कुछ वर्ष हम सबके लिए चुनौतिपूर्ण साबित होंगे।

सहायक अभियंता

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में राजभाषा संरक्षण एवं संवर्धन में मेरे पथप्रदर्शक

अर्चना गुप्त

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में अपने कार्यकाल के अंतिम 'पखवाड़े', अंतिम 'संगोष्ठी' और अंतिम 'जलविकास' के प्रकाशन के अवसर पर स्मृतियों की वर्षा होना स्वाभाविक ही है, चूंकि जब यह सभी कार्य आरंभ हुए तो उस समय के अपने अधिकारियों के समर्थन और संरक्षण ने ही इन कार्यों की रूपरेखा और आधारशिला में नींव के पत्थर की भांति कार्य किया। जब 1986 में मैंने राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिंदी अनुवादक के रूप में कार्यभार संभाला तब मेरे प्रथम हिंदी अधिकारी डॉ नरेश कुमार, एक विद्यालय के प्रधानाध्यापक के पद से प्रतिनियुक्ति पर पहली बार हिंदी अधिकारी के पद पर आए थे और अनुवाद से उनका परिचय पहली बार राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में ही हुआ था। हमारा अनुभाग तब भी निदेशक (तकनीकी) श्री एस के भाटिया जी के अधीन था तो उन्होंने स्पष्ट आदेश दिये कि डॉ साहब राजभाषा कार्यान्वयन संभालेंगे और मैं अनुवाद देखूंगी। कार्यभार संभालने के पहले ही दिन हमारे तत्कालीन महानिदेशक श्री रंतिदेवन ने अपने कक्ष में मुझे बुलाया और एक तकनीकी अनुवाद जो शायद कहीं बाहर से करवाया गया था मुझे पढ़ने के लिए दिया और उसमें उन्होंने कुछ शब्दों को रेखांकित किया हुआ था, उन्हें स्पष्ट करने के लिए कहा। अधिक तो मुझे याद नहीं पर **'River Bed'** के लिए 'नदी बिस्तर' शब्द का उपयोग तुरंत पकड़ में आया और मैंने डीजी साहब को बताया कि यह 'नदी तल' है, वह मुस्कुराए और उन्होंने यह अनुवाद मुझे दोबारा करने के लिए कहा, जो करके मैं ले गई वह संतुष्ट हुए और मुझे अपना आशीर्वाद दिया और प्रेरणा दी कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के विनियम और उपनियम के साथ-साथ अन्य सामग्री भी तुरंत हिन्दी में तैयार की जाए। प्रारंभ के दो वर्ष में आरंभिक अनुवाद की ऐसी पृष्ठभूमि बनी जो आज भी जारी है। यहां मैं श्री एस के भाटिया जी का जिक्र न करूं तो भूमिका पूरी नहीं होगी। वे केवल पंजाबी में बातें करते थे और अनुवाद की वैटिंग स्वयं करते थे, कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता था कि जो व्यक्ति हिंदी की बातचीत में पंजाबी ले आते है वे कैसे अशुद्ध अनुवाद को तुरंत पकड़ लेते थे। हिंदी शब्द के लिए जिस तरह पूरी तकनीकी अवधारणा समझाकर सटीक शब्द का चयन करते थे, वह अद्वितीय था।

दूसरे महानिदेशक जो मुझे स्मरण में आते हैं वे डॉ. एम एस रेड्डी थे। मेरी हिंदी की फाइल पर उन्होंने आरंभ में अंग्रेजी में टिप्पणी कर दी, तो मैंने उनके पास जाकर निवेदन किया कि चूंकि संसदीय समिति का निरीक्षण आने वाला है और हमारी फाइलें निरीक्षण में जाएंगी तो आप कृपया अपनी टिप्पणी हिंदी में लिखने का कष्ट करें। ये उनका बड़प्पन था कि न केवल उन्होंने मेरी बात मानी अपितु मुझे निर्देश दिया कि मैं जो भी फाइल उन्हें भेजूं, उस पर अलग से कागज लगाकर अंग्रेजी में उस टिप्पणी को लिखूं और यह भी बताऊं कि उन्हें उस पर क्या लिखना है। यह राजविअ हिन्दी के प्रति उनका बहुत बड़ा योगदान था।

1990 में मेरी पदोन्नति हिंदी अधिकारी के पद पर हो गई। अनुवादक के रूप में श्री अविनाश ने मेरे सहायक के रूप में कार्यभार संभाला और उन्होंने अपने केवल 10-11 वर्ष के छोटे से कार्यकाल में राजविअ में राजभाषा नीति के प्रचार-प्रसार, राजभाषा नियमों, राजभाषा अधिनियम के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने की दृष्टि से बहुत अधिक योगदान दिया। राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन हो चुका था किंतु हिंदी दिवस, हिंदी सप्ताह, कार्यशालाएं, राजभाषा निरीक्षण ये सब कार्य हम मिल कर सुचारु रुप से कर पाए।

तब तक राजविअ की तकनीकी रिपोर्टें भी पूरी होने लगी थी। केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध-चम्बल दो पूर्व संभाव्यता रिपोर्टों का अनुवाद केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से करवा कर उसकी भाषा और विषय की दृष्टि से मैंने और उनकी शुद्धता की दृष्टि से उनका पुनरीक्षण श्री एन.सी.जैन, अधीक्षण अभियंता द्वारा किया गया जिन्होंने बाद में निदेशक तकनीकी के साथ-साथ राजभाषा अधिकारी का पदभार भी संभाला।

सहायक निदेशक (राजभाषा)

वर्ष 2008 में राजभाषा पदाधिकारियों की कविताओं का संकलन ''कुछ कविताएं: हम सबकी'' प्रकाशित हुआ। इसी अवधि में तकनीकी शब्दावली आयोग के अधिकारियों के साथ एक विभागीय तकनीकी शब्दावली विकसित की।

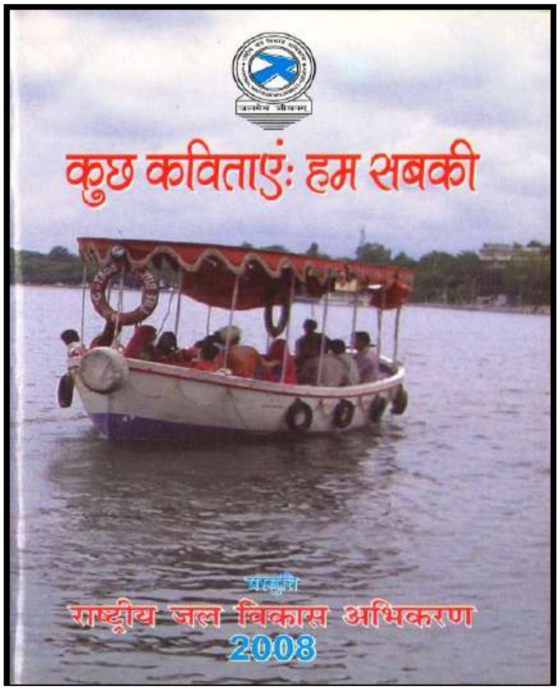

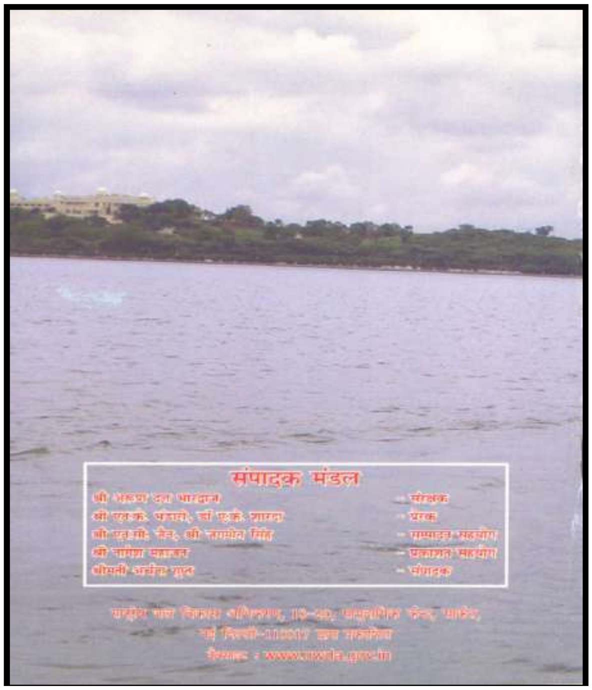

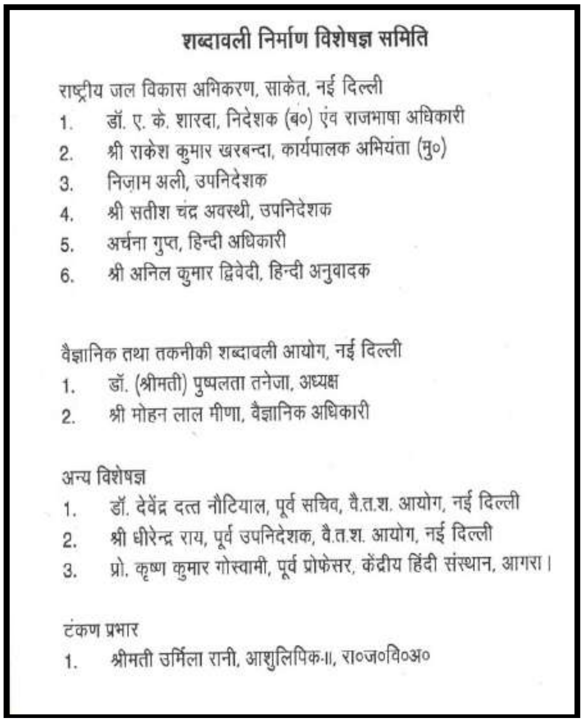

शब्दावली निर्माण विशेषज्ञ समिति

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, साकेत, नई दिल्ली

1. डॉ. ए. के. शारदा, निदेशक (ब०) एंव राजभाषा अधिकारी
2. श्री राकेश कुमार खरबन्दा, कार्यपालक अभियंता (मु०)
3. निज़ाम अली, उपनिदेशक
4. श्री सतीश चंद्र अवस्थी, उपनिदेशक
5. अर्चना गुप्त, हिन्दी अधिकारी
6. श्री अनिल कुमार द्विवेदी, हिन्दी अनुवादक

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली

1. डॉ. (श्रीमती) पुष्पलता तनेजा, अध्यक्ष
2. श्री मोहन लाल मीणा, वैज्ञानिक अधिकारी

अन्य विशेषज्ञ

1. डॉ. देवेंद्र दत्त नौटियाल, पूर्व सचिव, वै.त.श. आयोग, नई दिल्ली
2. श्री धीरेन्द्र राय, पूर्व उपनिदेशक, वै.त.श. आयोग, नई दिल्ली
3. प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, पूर्व प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा।

टंकण प्रभार

1. श्रीमती उर्मिला रानी, आशुलिपिक-II, रा०ज०वि०अ०

इसी समय श्री आर.के.जैन, वर्तमान मुख्य अभियंता ने निदेशक (तक.) के रूप में मुख्यालय में कार्यभार संभाला और हमने तकनीकी विषय पर हिंदी में व्याख्यान प्रारंभ किए जो हमारे अभियंताओं के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुए।

डॉ ए के शारदा ने एक लंबे समय तक राजभाषा अधिकारी की भूमिका निभाई और राजभाषा के कार्यों में नई शुरुआत करने से मुझे कभी नहीं रोका। हिंदी संगोष्ठी का आयोजन करने का सुयोग तभी मुझे मिला। श्री एन.के. भंडारी, मुख्य अभियंता ने भी तकनीकी संगोष्ठियों के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह मेरा सौभाग्य है कि अब तक हम विभाग में 7 तकनीकी संगोष्ठियां हिन्दी माध्यम से करने में सफल हो चुके हैं।

मेरे अन्य राजभाषा अधिकारी रहे श्रीमती जानसी विजयन जिनसे मैंने हर काम को उत्कृष्टता की सीमा तक ले जाने का गुर सीखा। श्री हरिनारायण दीक्षित जी का कार्यकाल भी बहुत अच्छा रहा, वे राजभाषा के कार्यों के साथ–साथ साहित्यिक और पौराणिक कथाओं में भी निष्णात थे। श्री के.पी. गुप्ता जी का कार्यकाल मेरे लिए एक अविस्मरणीय अवधि है। उनका मार्गदर्शन और दृढ़ निश्चय अप्रतिम थे। निदेशक (तक.) के रूप में वे कितने भी व्यस्त हों, मैं जब भी किसी बात के लिए उनके पास गई उन्होंने बहुत धैर्य से समस्या का हल निकाला। उनके समय में सबसे अधिक संसदीय समिति के निरीक्षण भी हुए जिनकी व्यवस्था की प्रशंसा स्वयं समिति के सदस्य ने भी की। श्री मुजफ्फर अहमद जी की भी मैं आभारी हूं।

मैं श्री आर.के. जैन साहब का भी पुनः उल्लेख करना चाहूंगी, जिन्होंने मुख्य अभियंता के रूप में तकनीकी संगोष्ठी की सभी स्मारिकों में प्रकाशित होने वाली तकनीकी लेखों की चयन समिति के अध्यक्ष के रूप में हों, या प्रोत्साहन योजनाओं की चयन समिति के अध्यक्ष के रूप में, हिन्दी के कार्य में सदैव एक नई ऊर्जा का संचार किया। राजविअ का कार्यबल हो या शासी निकाय या सोसाइटी की बैठकें सभी मंत्रियों के भाषणों के अंग्रेजी प्रारूप में उनका जितना योगदान रहता है, उससे तनिक भी कम हिंदी के प्रारूप में नहीं रहता। अनुवाद में सहज और सरल शब्दों का उपयोग उन्होंने ही करना सिखाया है और राजभाषा के काम में अभूतपूर्व गति देने में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

मेरे वर्तमान राजभाषा अधिकारी श्री डी.के.शर्मा जी से पूर्व निरीक्षण, संगोष्ठियों और अब मिल रहे सहयोग के लिए उनका भी आभार व्यक्त करना चाहूंगी।

यहां मैं अपनी सहयोगी श्रीमती उर्मिला से निरंतर प्राप्त रहे सहयोग के लिए भी दिल से आभारी हूं। कार्यालय के दिन–प्रतिदिन के कार्यों के साथ–साथ राजभाषा संबंधी सभी कार्यों में वे हमेशा मेरा दाहिना हाथ रही। उनकी सेवानिवृत्ति पर मुझे लग रहा था कि मैं कैसे आगे कार्य करूंगी किंतु रीना वाधवा ने उस रिक्त स्थान की पूर्ति बहुत ही अच्छे से की है और मुझे पूरा विश्वास है कि श्री अनिल द्विवेदी और श्रीमती रीना वाधवा राजभाषा हिंदी के कार्य में एक नवीन ऊर्जा का संचार करेंगे। मैं श्रीमती तुलसी भद्रा और श्री रामदास जी की भी आभारी हूँ। यहॉं मैं श्री चिरब्रत सरकार, निदेशक प्रशासन का उल्लेख भी करना चाहूंगी। हिन्दीतर भाषी होने के बावजूद वे हिन्दी में स्वयं कार्य करते हैं जो अद्‌भुत है।

मैं अपने वर्तमान महानिदेशक श्री भोपाल सिंह जी के रूप में राजभाषा संरक्षक को पाकर बहुत अभिभूत हूं और मुझे पूरा विश्वास है कि नदी जोड़ कार्यक्रम को जिस प्रकार उनके आने से गति मिली है और हम सब उसके क्रियान्वयन की दिशा में 'केन–बेतवा लिंक परियोजना' के रूप में एक मील का पत्थर देश को उपलब्ध करा पाए हैं, उसी प्रकार राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिंदी रूपी वृक्ष की जड़ों के निरंतर सिंचन में वे सदा सफल होंगे।

अंत में मैं जल विकास के इस अंक में राजविअ को प्राप्त पिछले कुछ गौरव और आयोजनों की झलकियां भी प्रस्तुत करना चाहती हूं। केवल हमारे ही नहीं अपितु हमारे क्षेत्रीय कार्यालयों में भी हमारे अधिकारियों ने राजभाषा की सुदृढ़ नींव रखी है और राजभाषा का कार्यान्वयन का आलीशान महल खड़ा किया है। मुख्यालय एवं हमारे सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में निरंतर प्राप्त हो रहे पुरस्कारों से यह सिद्ध होता है कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण का प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी राजभाषा की इस गौरवशाली यात्रा में संपूर्ण उत्कृष्टता और गंभीरता से अपना योगदान दे रहा है और देता रहेगा, ऐसी मेरी कामना है। मैं सम्पूर्ण राजविअ के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को धन्यवाद देना चाहूँगी, जिन्होंने हिन्दी के कार्यों को अपनी सम्पूर्ण निष्ठा और लगन से पूरा किया है।

मैं सौभाग्यशाली हूं कि राजभाषा क्षेत्र में राष्ट्रीय जल विकास के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से मुझे केवल सहयोग ही नहीं अपितु उनका स्नेह और विश्वास भी निरंतर मिला है। मैं राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के भविष्य की राजभाषा की उपलब्धियों को आप सभी के सहयोग से साकार देखना चाहती हूं।

एक गरिमामयी, उज्ज्वल राजभाषा मय राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के लिए मेरी शुभकामनाएं!

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
महात्मा गांधी

भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है। हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।
नरेंद्र मोदी (प्रधान मंत्री)

भारतीय सभ्यता की अवरिल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

अमित शाह (गृह मंत्री)

हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद–भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।
मदन मोहन मालवीय

रा.ज.वि.अ. की गतिविधियां

जुलाई–सितम्बर, 2021 की तिमाही का तकनीकी सारसंग्रह

जुलाई–सितम्बर, 2021 की तिमाही के दौरान पूरे किए गए महत्वपूर्ण कार्य

- वर्ष 2020–21 के लिए परियोजना की संशोधित लागत के साथ केन–बेतवा लिंक परियोजना के मूल्यांकन के लिए अद्यतन पीआईबी ज्ञापन 19–07–2021 को जल शक्ति मंत्रालय को भेजा गया है और फिर उसे 30.07.2021 को वित्त मंत्रालय को प्रस्तुत किया गया।
- ब्राह्मणी बेसिन के डब्ल्यूबीएस की पीडीएफ प्रति मुख्य अभियंता (उत्तर) द्वारा पत्र दिनांक 20.07.2021 के माध्यम से परिचालित की गई।
- उच्च रिजोल्युशन स्टीरियो उपग्रह का उपयोग करते हुए नेपाल भाग में गंडक–गंगा और घाघरा–यमुना लिंक परियोजनाओं के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण के लिए एक मसौदा अनुमान तैयार किया गया।
- जल संसाधन विभाग मध्य प्रदेश सरकार भोपाल ने केन–बेतवा लिंक तथा लोअर ओर पर फसल पद्धति के लिए फसल जल आवश्यकता पर दिए उत्तरों का अनुमोदन मिल गया है तथा उसमें सुधार भी किया गया है इसके इसके बाद इसे दिनांक 23.07.2021 के पत्र द्वारा निदेशक, एनपी, केंद्रीय जल आयोग, नई दिल्ली को भेज दिया गया है।
- केन–बेतवा लिंक परियोजना के तहत बरियारपुर पिकअप वियर के डी/एस में प्रस्तावित दो नए बैराजों के जल ग्रहण क्षेत्र के स्थलाकृतिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट, रेखाचित्र (एल–सेक्शन, क्रॉस सेक्शन, कंटूर प्लान, एरिया कैपेसिटी टेबल) की जांच की गई और टिप्पणियों पर विचार किया जा रहा है।
- यमुना–राजस्थान लिंक परियोजना की प्रारूप व्यवहार्यता रिपोर्ट संशोधित की गई तथा मुख्य अभियंता (उत्तर) कार्यालय इसकी समीक्षा कर रहा है।
- सचिव (सीएडीए, जल संसाधन विभाग) और महानिदेशक 'मिरी' नासिक ने 10.07.2021 को दमनगंगा–वैतरणा–गोदावरी लिंक परियोजना का दौरा किया और इस दौरे में जल संसाधन विभाग, महाराष्ट्र सरकार और राजविअ के विभिन्न अधिकारी उनके साथ रहे।
- मुख्य अभियंता (द.), राजविअ, हैदराबाद ने 23.07.2021 से 25.07.2021 तक दमनगंगा–साबरमती–चोरवाड़ लिंक परियोजना की साबरमती–चोरवाड़ पहुंच का दौरा किया।
- मुख्य अभियंता (उत्तर), राजविअ, हैदराबाद ने 10.07.2021 को बाढ़ के पानी से गोदावरी–कृष्णा लिंक के वैकल्पिक संरेखण की गुंजाइश के संबंध में पोलावरम परियोजना, पट्टीसीमा एलआई परियोजना, पोलावरम आरबीसी और एलबीसी संरेखण, दौलेश्वरम और प्रकाशम बैराज का दौरा किया और पोलावरम परियोजना के अधिकारियों के साथ चर्चा की।
- मुख्य अभियंता (उत्तर) ने सारदा–गोमती लिंक की पूर्व व्यवहार्यता रिपोर्ट की तैयारी की प्रगति पर मुख्य अभियंता और विभागाध्यक्ष, सिंचाई और जल संसाधन विभाग, उत्तर प्रदेश के साथ विचार–विमर्श किया और प्राप्त सुझावों के अनुसार पूर्व संभाव्यता रिपोर्ट में संशोधन किया जा रहा है।
- पन्ना में केन बेतवा लिंक परियोजना से प्रभावित वन भूमि के बदले पन्ना टाइगर रिजर्व को दिए जाने वाले चयानित गांवों के राजस्व भूमि सत्यापित क्षेत्र (केएमएल फाइल सहित) एपीपीएफ (भूमि प्रबंधन) मध्य प्रदेश सरकार द्वारा पारित प्रस्ताव महानिरीक्षक वन (भूमि प्रबंधन) एवं पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार नई दिल्ली को सौंप दिया गया है।
- सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, जल शक्ति मंत्रालय की अध्यक्षता में राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण (एनडब्ल्यूडीए) के शासी निकाय की अड़सठवीं (68वीं) बैठक 17.08.2021 को आयोजित की गई।
- केन–बेतवा लिंक परियोजना के लिए प्रथम चरण वन मंजूरी में उल्लिखित शर्तों के अनुपालन का प्रयास किया जा रहा है। इस संबंध में, एपीसीसीएफ (भूमि प्रबंधन) मध्य प्रदेश सरकार द्वारा पीटीआर के आसपास चयनित 14 गांवों की गैर–वन भूमि के लिए अंतिम प्रस्ताव तैयार किया गया है और वन एवं पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली को प्रस्तुत किया।

- केन–बेतवा लिंक परियोजना के तहत पैलानी बैराज और मरौली बैराज की भूवैज्ञानिक और भू–तकनीकी जांच करने के लिए, अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण सर्किल, ग्वालियर द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया और जीएसआई, के हस्ताक्षर के लिए लखनऊ भेजा गया।
- नागावली–वंशधारा–रुशिकुल्या और सारदा–गोमती अंतर–राज्यीय लिंक परियोजनाओं के पीएफआर को अंतिम रूप दिया जा रहा है।
- महानदी (बरमुल)–गोदावरी (दौलेश्वरम) लिंक परियोजना के सर्वेक्षण एवं अन्वेषण तथा विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने के अनुमान की जांच की जा रही है।
- अन्वेष सर्किल, राजविअ, भुवनेश्वर और पटना का क्रमशः 09.08.2021 से 18.08.2021 और 23.08.2021 से 31.08.2021 तक एजी लेखा परीक्षा आयोजित किया गया है।
- भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई)–सीआर नागपुर टीम ने 9.8.2021 से 10.8.2021 तक नासिक का दौरा किया और डीवीजी लिंक के 3 कोशीमेट बोर होल कोर नमूनों की भूवैज्ञानिक मैपिंग की और अन्वेषण प्रभाग–1 नासिक में प्रस्तावित एकदारे बांध में ड्रिल किए गए रॉक कोर नमूनों की लॉगिंग की।
- जीईआरएमआई (गुजरात ऊर्जा अनुसंधान और प्रबंधन संस्थान), गांधीनगर के अधिकारियों ने जल संसाधन विभाग, महाराष्ट्र सरकार तथा राजविअ अधिकारियों के साथ 19.8.2021 को प्रस्तावित डीईजी परियोजना के लिए सौर ऊर्जा संयंत्र के लिए प्रस्तावित भूमि का दौरा किया।
- सीएसएमआरएस नई दिल्ली के एक दल ने 24.8.2021 से 27.8.2021 की अवधि के दौरान अन्वेष प्रभाग–द्वितीय, नासिक का दौरा किया। टीम ने 3 कोशीमेट बोर होल कोर नमूनों (डीवीजी लिंक के) की जांच की और प्रयोगशाला परीक्षण के लिए एक कोर नमूने का चयन किया।
- डीएससी लिंक की संशोधित पीएफआर अन्वेषण सर्कल वलसाड में जांच की जा रही है।
- एनडब्ल्यूडीए के विभिन्न कार्यालयों में नागरिकों की भागीदारी और नदी को जोड़ कार्यक्रम पर जागरूकता पैदा करने के लिए आजादी का अमृत महोत्सव का आयोजन किया गया था।
- 15.08.2021 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एनडब्ल्यूडीए के विभिन्न कार्यालय परिसरों में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया।
- उप निदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यालय, बेलारपुर, नवी मुंबई ने दिनांक 17.08.2021 को हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए अन्वेषण सर्किल, राजविअ, वलसाड के कार्यालय का निरीक्षण किया।
- अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, वडोदरा, अन्वेषण सर्किल, राजविअ वलसाड; और अन्वेषण प्रभाग, राजविअ बेंगलुरु में क्रमशः 26.08.2021, 27.08.2021 और 28.08.2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक आयोजित की गई।
- महानिदेशक, राजविअ और अन्य अधिकारियों ने पीटीएन में अतिरिक्त पानी को उकाई बांध में पथांतरिक करने के लिए सिमुलेशन अध्ययन को अंतिम रूप देने के लिए 01–09–2021 और 02–09–2021 को वीसी के माध्यम से पीटीएन लिंक सिमुलेशन अध्ययन के संबंध में आयोजित बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और राजविअ के अन्य अधिकारियों ने प्रमुख अभियंता, जल संसाधन विभाग, मध्य प्रदेश सरकार के साथ मध्य प्रदेश और राजस्थान द्वारा पानी के उपयोग के मुद्दे पर मध्य प्रदेश और ईआरसीपी के साथ पी–के–सी लिंक के प्रस्तावित एकीकरण पर पानी के आदान–प्रदान सहित 03–09–2021 को भोपाल में आयोजित बैठक में भाग लिया । मध्य प्रदेश द्वारा कालीसिंध में अधिशेष जल के प्रस्तावित उपयोग को अंतिम रूप दिया गया।
- अधीक्षण अभियंता, एनडब्ल्यूडीए, वलसाड और अन्य अधिकारियों ने 06.09.2021 को औरंगाबाद, महाराष्ट्र में कोंकण क्षेत्र से सूखा प्रवण मराठवाड़ा क्षेत्र में पानी के पथातरण के लिए नदी जोड़ने की परियोजनाओं के संबंध में वित्त मंत्रालय के राज्य मंत्री, श्री डॉ भगवत कराड की बैठक में भाग लिया।
- दमनगंगा (एकदारे) – गोदावरी और दमनगंगा (वैल / वाघ) – वैतरणा – गोदावरी (कडवा देव) की महाराष्ट्र की अंतर्राज्यीय लिंक परियोजनाओं की डीपीआर की तैयारी का कार्य पगति पर है। डॉ. संजय एम. बेलसारे, मुख्य अभियंता (डब्ल्यूआरडी), उत्तर महाराष्ट्र क्षेत्र ने 07.09.2021 को नासिक में एनडब्ल्यूडीए के अधिकारियों के साथ इन दोनों लिंकों की कार्य प्रगति की समीक्षा की।
- महानिदेशक, राजविअ ने वर्ष 2021–22 के लिए दिनांक 08.09.2021 को कार्यक्रम और प्रगति की वर्चुअल समीक्षा बैठक आयोजित की।

- महानिदेशक, राजविअ ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से केन–बेतवा लिंक परियोजना के संदर्भ में पन्ना टाइगर रिजर्व, एमपी के लिए डब्ल्यूआईआई, देहरादून द्वारा तैयार की जा रही एकीकृत लैंडस्केप प्रबंधन योजना के मसौदे की समीक्षा और अंतिम रूप देने के लिए एक वीडियो कांफ्रेंसिंग (वीसी) के माध्यम से संयुक्त बैठक बुलाई।
- महानिदेशक, राजविअ ने 13–09–2021 को केन–बेतवा लिंक परियोजना चरण– I की वन भूमि के डायवर्जन के चरण– I मंजूरी के संबंध में एडीजी (वन) एमओईएफ और सीसी नई दिल्ली के साथ बैठक में भाग लिया।
- मौजूदा बरियारपुर पिकअप वियर के डी/एस में प्रस्तावित दो नए बैराजों की डायमंड कोर डीप ड्रिलिंग सहित भू–तकनीकी जांच के लिए निविदा की स्वीकृति दिनांक 14.09.2021 के साथ–साथ एनडब्ल्यूडीए की वेबसाइट पर सीपीपीपी पोर्टल पर प्रकाशित की गई है।
- श्री अरुण नायक, एसई, सीएडीडी, जल संसाान विभाग, महाराष्ट्र सरकार, ने श्री एसआर पाटिल, ईई, एमआईडी, जल संसाान विभाग, महाराष्ट्र सरकार के साथ 16.09.2021 को अन्वेषण प्रभाग, राजविअ नासिक का दमनगंगा (एकदारे) – गोदावरी और दमनगंगा (वैल / वाघ) और वैतरणा – गोदावरी (कडवा देव) अंतर्राज्यीय लिंक परियोजनाओं के डीपीआर तैयार करने के कार्यों की स्थिति की समीक्षा की।
- मेसर्स मुश्ताक अहमद, सनावद, भोपाल को दिए गए ड्रिलिंग कार्यों की समीक्षा के लिए निविदा समिति की तीसरी बैठक, और डीवीजी लिंक की डीपीआर के लिए एजेंसी द्वारा किए गए अतिरिक्त ड्रिलिंग कार्य की स्वीकृति के लिए 16–09–2021 को मुख्य अभियंता (दक्षिण), एनडब्ल्यूडीए की अध्यक्षता में ऑनलाइन वर्चुअल वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से बैठक आयोजित की गई।
- मुख्य अभियंता (उत्तर), लखनऊ की अध्यक्षता में निविदा समिति की बैठक 16–09–2021 को वर्चुअल मोड के माध्यम से केन–बेतवा लिंक नहर परियोजना के निर्माण सामग्री सर्वेक्षण और मोटे और महीन कुल नमूनों के परीक्षण के अनुमान का मूल्यांकन करने के लिए सीएसएमआरएस और जीएसआई द्वारा केबीएलपी के अंतर्गत मौजूदा बरियारपुर पिकअप वियर के डी/एस में प्रस्तावित दो बैराजों के लिए भूवैज्ञानिक और भू–तकनीकी जांच के परामर्श कार्य को पूरा करने के लिए बैठक की गई।
- राजविअ की 68वीं शासी निकाय सचिव, ज.सं.न.वि.व गं.सं. वि. जल शक्ति मंत्रालय की अध्यक्षता में 17.09.2021 को आयोजित बैठक में वर्ष 2019–20 के लिए लेखा परीक्षित खातों के साथ वार्षिक रिपोर्ट को मंजूरी दी गई।
- अधीक्षण अभियंता, अन्वेषण सर्किल, राजविअ, भुवनेश्वर और अन्य अधिकारियों ने श्री बिश्वेश्वर टुडू, माननीय जल शक्ति और जनजातीय मामलों के राज्य मंत्री, भारत सरकार, के साथ 18.09.2021 को स्टेट गेस्ट हाउस, भुवनेश्वर में जल शक्ति मंत्रालय के अधिकारियों की परिचयात्मक बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने नेशनल इंफ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन (एनआईपी) परियोजनाओं, ज.सं.न.वि.व गं.सं. वि की निगरानी के लिए अंतर–मंत्रालयी संचालन समिति (आईएमएससी) की तीसरी बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (उत्तर), राजविअ, लखनऊ और राजविअ के अन्य अधिकारियों ने मुख्य अभियंता, आईएमओ, केंद्रीय जल आयोग, नई दिल्ली की अध्यक्षता में 24–09–2021 को मध्य प्रदेश राज्य से संबंधित ओआरआर सिंचाई परियोजना और केन–बेतवा लिंक परियोजना से संबंधित निचले क्षेत्र के सिंचाई योजना पहलू के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने सचिव (ज.सं.न.वि.व गं.सं. वि) द्वारा 24–09–2021 को सचिव, ज.सं.न.वि.व गं.सं. वि, जल शक्ति मंत्रालय एसएस भवन, नई दिल्ली के कक्ष में नेशनल इंटरलिंकिंग ऑफ रिवर अथॉरिटी (एनआईआरए) के गठन पर बैठक में भाग लिया।
- अधीक्षण अभियंता, जांच मंडल, एनडब्ल्यूडीए, ग्वालियर, निदेशक (वित्त), एनडब्ल्यूडीए ने मुख्य अभियंता (उत्तर), एनडब्ल्यूडीए, लखनऊ की अध्यक्षता में 27–09–2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पूर्व बोली सम्मेलन की बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्यालय के संबंधित अधिकारियों ने सदस्य (डब्ल्यूपी एंड पी), सीडब्ल्यूसी, नई दिल्ली की अध्यक्षता में 28–09–2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित ब्रिक्स जल मंत्रियों की बैठक और ब्रिक्स जल मंच की योजना के लिए समिति की छठी बैठक में भाग लिया।
- श्री श्रीराम वेदिरे, सलाहकार, जल शक्ति मंत्रालय की अध्यक्षता में 29.09.2021 को टीएफ–आईएलआर की 14वीं बैठक आयोजित की गई।

- महानिदेशक, राजविअ और मुख्यालय के संबंधित अधिकारियों ने केन–बेतवा लिंक परियोजना के चरण– ।। वन मंजूरी में मुद्दों पर चर्चा करने और मुद्दों को सुलझाने के लिए जल शक्ति मंत्रालय के सचिव, ज.सं.न.वि.व गं.सं. वि द्वारा 30–09–2021 वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (वीसी) के माध्यम से बुलाई गई बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (उत्तर), राजविअ, लखनऊ ने 30–09–2021 को टैंकों की डीपीआर तैयार करने और केन नहर की रीमॉडेलिंग पर अधीक्षण अभियंता, आई एंड डब्ल्यूआरडी, यूपी सरकार, बांदा के साथ बैठक की।
- 03–09–2021 को हुई बैठक में जल संसाधन विभाग भोपाल मध्य प्रदेश सरकार द्वारा सुझाए गए ईआरसीपी के साथ संशोधित पी–के–सी लिंक एकीकरण का पीएफआर की जांच मुख्य अभियंता (एन), एनडब्ल्यूडीए, लखनऊ में प्रगति पर है।
- सर्वेक्षण और अन्वेषण के अनुमान और डीपीआर तैयार करना
- ।) मानस–संकोश–तिस्ता–गंगा लिंक, ।।) महानदी–गोदावरी लिंक परियोजना और सोन बांध–एसटीजी लिंक परियोजना की एफआर तैयार करने संबंधी सर्वेक्षण और अन्वेषण के अनुमान और डीपीआर तैयार करना का कार्य राजविअ मुख्यालय में किया जा रहा है। .
- मुख्य अभियंता (उत्तर), राजविअ लखनऊ ने कोसी–घाघरा लिंक परियोजना की एफआर तैयार करने के लिए अपने अधीनस्थों के साथ एक समीक्षा बैठक बुलाई।

जुलाई–सितम्बर, 2021 की तिमाही के दौरान महत्वपूर्ण बैठकें

- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (उत्तर) ने 05.07.2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बिहार के अंतर्राज्यीय लिंक पर चर्चा करने के लिए के.ज.आ., राजविअ और जीएफसीसी की आंतरिक बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 05.07.2021 को अपर सचिव, जल शक्ति मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली के चैंबर में केबीएलपी पर पीआईबी नोट पर विभाग की प्रतिक्रियाओं को अंतिम रूप देने के लिए अपर सचिव, जल संसाधन नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग द्वारा आयोजित बैठक में भाग लिया।
- 06.07.2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से अंतर्राज्यीय लिंक पर चर्चा करने के लिए महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (उत्तर) ने के.ज.आ., राजविअ और बिहार सरकार की संयुक्त बैठक में भाग लिया।
- अधीक्षक अभियंता–।, राजविअ ने माननीय जल शक्ति मंत्री की तिरु दुरईमुरुगन, माननीय जल संसाधन मंत्री, तमिलनाडु के साथ 06.07.2021 को माननीय जल शक्ति राज्यमंत्री, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली के चैंबर में "तमिलनाडु में नदियों को जोड़ने" के संबंध में बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मु.) ने सदस्य (जल आयोजना एवं परियोजना) केंद्रीय जल आयोग की अध्यक्षता में दिनांक 09.07.2021 को पार्बती–कुनो–सिंध (पीकेएस) लिंक और पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना (ईआरसीपी) के प्रस्तावित एकीकरण पर स्थिति और मुद्दों की समीक्षा के लिए कार्यकारी समूह की तीसरी वर्चुअल बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण और मुख्य अभियंता (मु.) ने 14.07.2021 को समिति कक्ष, पहली मंजिल, एसएस भवन, नई दिल्ली में सचिव (जल संसाधन नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय परियोजनाओं पर समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण और मुख्य अभियंता (मु.) ने 15.07.2021 को श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली, में राजविअ के कार्यों के संबंध में समग्र जनादेश, परियोजनाओं और योजनाओं के संबंध में प्रस्तुतिकरण के लिए माननीय जल शक्ति राज्यमंत्री द्वारा आयोजित एक ब्रीफिंग बैठक में भाग लिया।
- मुख्य अभियंता (मु.), राजविअ ने 21.07.2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जल संसाधन प्रबंधन पर आयोजित "जल उद्योग को बढ़ावा देने की क्षमता का डिजिटलीकरण" विषय पर वर्चुअल शिखर सम्मेलन में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 22.07.2021 को "सिंचाई परियोजनाओं का निर्माण" पर एक वर्चुअल सम्मेलन के मुख्य सत्र में नदी जोड़ने वाली परियोजनाओं के अंतर्गत अवसर" विषय पर भाषण दिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मु.) ने माननीय मंत्री (जल शक्ति) द्वारा दिनांक 23.07.2021 को जल शक्ति मंत्री, श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली में 26.07.2021 को राज्य सभा में नदियों के अंतरयोजन से संबंधित तारांकित प्रश्नों पर उत्तर देने के लिए एक ब्रीफिंग बैठक में भाग लिया।

- महानिदेशक, राजविअ और मुख्य अभियंता (मु.) ने गांधी–नगर में दमनगंगा–पिंजाल, पार–तापी–नर्मदा के जल बंटवारे और मंजूरी के संबंध में और गांधीनगर में डीएससी लिंक परियोजना के संबंध में सहमति पर दिनांक 26.07.2021 को आयोजित सचिव, एनडब्ल्यूआरडब्ल्यूएस और कल्पसर विभाग, गुजरात सरकार के, विशेष सचिव, सौराष्ट्र, गुजरात सरकार, मुख्य अभियंता (एसजी) और अपर सचिव, गुजरात सरकार के साथ बैठक की।
- अधिशासी अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, राजविअ, बेंगलुरू ने श्री येदियुरप्पा, मुख्यमंत्री, कर्नाटक सरकार, के साथ दिनांक 13.07.2021 को श्री गजेंद्र सिंह शेखावत, माननीय जल शक्ति मंत्री की विधान सभा सौध, बेंगलुरु बैठक में भाग लिया।
- सचिव, ज.सं.न.वि. व गं.सं.वि. की अध्यक्षता में राजविअ के शासी निकाय की अड़सठवीं (68 वीं) बैठके 17.08.2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से आयोजित की गई थी।
- महानिदेशक, राजविअ और मु.अ. (मुख्यालय) ने 03.08.2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से वाटर अताशे (एमएएसएचवी) – इज़राइल दूतावास के साथ एक परिचयात्मक बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मु.अ. (मुख्यालय) ने 05.08.2021 को एशिया निदेशक, जल और डिजिटल, जैकब्स (सीएच2एम हिल सिंगापुर) के साथ एक बैठक की।
- महानिदेशक, राजविअ और मु.अ. (मुख्यालय) ने 05.08.2021 को वित्त मंत्रालय में पीआईबी पर एक प्रस्तुतिकरण दिया।
- डीजी, एनडब्ल्यूडीए ने 09.08.2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से पार–तापी–नर्मदा के सिमुलेशन के संबंध में एक बैठक की।
- महानिदेशक, राजविअ ने 17.08.2021 को पेयजल और स्वच्छता विभाग, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली के सम्मेलन कक्ष में आरबीएम के अंतर्गत संबंधित घटक के संबंध में माननीय मंत्री (जल शक्ति) की अध्यक्षता में एक समीक्षा बैठक में भाग लिया। .
- महानिदेशक, राजविअ ने सचिव, ज.सं.न.वि. व गं.सं.वि. जल शक्ति मंत्रालय–सह–मिशन डायरेक्टर, पीएमकेएसवाई की अध्यक्षता में दिनांक 18.08.2021 को ज.सं.न.वि. व गं.सं.वि. जल शक्ति मंत्रालय श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली की पहली मंजिल पर आयोजित प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (पीएमकेएसवाई) के कार्यान्वयन के लिए कार्यकारी समिति की तीसरी बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मु.अ. (मुख्यालय) ने 19.08.2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से ब्रिक्स जल मंत्रियों की बैठक और ब्रिक्स जल मंच की योजना बनाने के लिए समिति की पांचवीं बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 23.08.2021 को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्रीय जल अकादमी, केंद्रीय जल आयोग, पुणे द्वारा आयोजित "भारत के जल क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग पर श्रृंखला" पर वेबिनार के दौरान "नदियों को जोड़ने में अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे की चुनौतियां" पर एक प्रस्तुतिकरण दिया। .
- महानिदेशक, राजविअ और मु.अ. (मुख्यालय) ने 23.08.2021 को केन बेतवा लिंक परियोजना चरण II के अनुमोदन के लिए मुख्य अभियंता (पीएओ) केंद्रीय जल आयोग के साथ केंद्रीय जल आयोग, आर.के. पुरम, नई दिल्ली में एक बैठक की।
- 25.08.2021 को "सबसे उपयुक्त वैकल्पिक योजना की पहचान के लिए सिस्टम स्टडीज पर उप समिति" की 18 वीं बैठक आयोजित की गई।
- मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने 26.08.2021 को अपने कार्यालय कक्ष में आरबीएम योजना से संबंधित ईएफसी मेमो पर संयुक्त सचिव (आरडी एंड पीपी) द्वारा आयोजित एक बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और राजविअ के अन्य अधिकारियों ने वीडियो कांफ्रेंस के माध्यम से दिनांक 27.08.2021 को आयोजित पार–तापी–नर्मदा लिंक के सिमुलेशन के संबंध में एक बैठक में भाग लिया
- महानिदेशक, राजविअ और मु.अ. (मुख्यालय) ने 31.08.2021 को वित्त सचिव और सचिव (व्यय) की अध्यक्षता में जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग की आरबीएम योजना के मूल्यांकन के लिए व्यय वित्त समिति (ईएफसी) की बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ ने पार–तापी–नर्मदा लिंक (पीटीएन) में पानी के बंटवारे के मुद्दों और दमनगंगा–पिंजाल लिंक और पीटीएन के कार्यान्वयन के लिए एमओए पर हस्ताक्षर करने के लिए आवश्यक मुद्दों के संबंध में दिनांक 31.08.2021 को माननीय जल शक्ति मंत्री, एसएस भवन, नई दिल्ली के चैंबर में माननीय मंत्री, जल शक्ति द्वारा की गई समीक्षा बैठक में भाग लिया।

- मुख्य अभियंता (उ) ने दिनांक 23.08.2021 को प्रधान मुख्य आयकर आयुक्त की अध्यक्षता में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लखनऊ की 86वीं अर्धवार्षिक बैठक में भाग लिया।
- महानिदेशक, राजविअ और मु.अ. (मुख्यालय) ने सेवा भवन, केंद्रीय जल आयोग, आर.के. पुरम, नई दिल्ली में दिनांक 24.08.2021 को आयोजित 7वां भारत जल सत्पाह के वैज्ञानिक समिति की तीसरी बैठक में भाग लिया।
- गृह मंत्रालय द्वारा जारी दिशा–निर्देशों के अनुसार राजविअ के सभी कार्यालयों में 01.09.2021 से 14.09.2021 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया।
- महानिदेशक, राजविअ ने 02–09–2021 को राज्य मंत्री, जल शक्ति मंत्रालय, नई दिल्ली के कक्ष में वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में भाग लिया।
- 02.09.2021 को मैट्रिक्स जियो सॉल्यूशंस द्वारा "जल संसाधन परियोजनाओं में आधुनिक सर्वेक्षण प्रौद्योगिकियों के अनुप्रयोग" पर एक वेबिनार आयोजित किया गया था। कनिष्ठ अभियंता स्तर तक के तकनीकी कर्मचारियों ने भाग लिया।
- दिनांकः 22–09–2021, को मुख्य अभियंता (द.), राजविअ, सिकंदराबादी – वरडार परियोजना प्रतिवेदन को अतिम रूप देने के संबंध में श्री राकेश सिंह, अवर मुख्य सचिव, डब्लू.आर.डी.ओ., कर्नाटक के साथ बैठक किया।
- अधिशासी अभियंता, अ. प्र–I, राजविअ, नासिक ने "उत्तर महाराष्ट्र क्षेत्र, जल संसाधन विभाग, नासिक" द्वारा 24–09–2021 को "वर्ष 2020–21 की उपलब्धियों और वर्ष 2021–22 के लिए एक साथ लक्ष्य निर्धारित करने के संबंध में आयोजित बैठक में भाग लिया।
- दिनांक 26–09–2021,को अधिशासी अभियंता, अन्वेषण प्रभाग, रा.जविअ, चैन्नै अधिकारियों ने मानीय श्रीप्रह्लाद सिंह पटेल, केंद्रीय मंत्री, खाद्य पदार्थ तथा प्रसंस्करण एवं जल शक्ति मंत्रालय, भारतसरकार, को एक प्रस्तुतिकरण दिया।
- 28.09.2021 को स्वच्छ भारत अभियान के एक हिस्से के रूप में, मुख्यालय और क्षेत्रीय कार्यालयों में राजविअ परिसर के सभी पार्किंग क्षेत्रों को साफ किया गया और कूड़े से मुक्त किया गया।

जुलाई–सितम्बर, 2021 की तिमाही के दौरान लंबित/मंजूर मुद्देः

- पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना के लिए तकनीकी–आर्थिक मंजूरी।
- केंद्रीय जल आयोग वर्तमान में पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना की डीपीआर का मूल्यांकन कर रहा है।
- केन–बेतवा लिंक परियोजना के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सीईसी द्वारा मंजूरी तथा वन एवं पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्टेज–II वन मंजूरी।
- वन एवं पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा पीसीसीएफ, मध्य प्रदेश राज्य (भूमि प्रबंधन) मिलकर वन एवं पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन की चरण–II के मुद्दों से संबंधित मंजूरी पर विचार कर रहे हैं।
- केबीएलपी के चरण–द्वितीय की डीपीआर
- माह के दौरान सीडब्ल्यूसी में केबीएलपी के दूसरे चरण की डीपीआर का मूल्यांकन कार्य प्रगति पर रहा।
- वर्ष 2020–21 के लिए परियोजना की संशोधित लागत के साथ केन–बेतवा लिंक परियोजना के मूल्यांकन के लिए अद्यतन पीआईबी ज्ञापन 19.07.2021 को जल शक्ति मंत्रालय को भेजा गया है और फिर 30.07.2021 को वित्त मंत्रालय को प्रस्तुत किया गया है।
- लोअर ओर परियोजना की अद्यतन ईआईए रिपोर्ट को वैपकोस (आई) लिमिटेड द्वारा अंतिम रूप दिया जा रहा है।
- 2020–21 के लिए राजविअ और जल शक्ति मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए।
- पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना के लिए तकनीकी–आर्थिक मंजूरी।
- वर्तमान में केंद्रीय जल आयोग पार–तापी–नर्मदा लिंक परियोजना की डीपीआर का मूल्यांकन कर रहा है।
- केन–बेतवा लिंक परियोजना के लिए माननीय सर्वोच्च न्यायालय के सीईसी द्वारा मंजूरी तथा वन एवं पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की स्टेज–II वन मंजूरी।
- वन एवं पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन मंत्रालय तथा पीसीसीएफ, मध्य प्रदेश राज्य (भूमि प्रबंधन) मिलकर वन एवं पर्यावरण तथा जलवायु परिवर्तन की चरण–II के मुद्दों से संबंधित मंजूरी पर विचार कर रहे हैं।
- केबीएलपी के चरण–द्वितीय की डीपीआर

- माह के दौरान सीडब्ल्यूसी में केबीएलपी के दूसरे चरण की डीपीआर का मूल्यांकन कार्य प्रगति पर रहा।
- वर्ष 2020–21 के लिए परियोजना की संशोधित लागत के साथ केन–बेतवा लिंक परियोजना के मूल्यांकन के लिए अद्यतन पीआईबी ज्ञापन 19–07–2021 को जल शक्ति मंत्रालय को भेजा गया है और फिर 30.07.2021 को वित्त मंत्रालय को प्रस्तुत किया गया है।
- लोअर ओर परियोजना की अद्यतन ईआईए रिपोर्ट को वैपकोस (आई) लिमिटेड द्वारा अंतिम रूप दिया जा रहा है।
- 2020–21 के लिए राजविअ और जल शक्ति मंत्रालय के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

सुमित्रानंदन पंत

हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है ।

डॉ. सम्पूर्णानन्द

भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

स्वामी दयानंद

01.07.2021 से 30.09.2021 तक नियुक्तियां

(क) पदोन्नतिः इस अवधि के दौरान पदोन्नति पाने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का विवरण इस प्रकार है।

क्र. सं.	नाम एवं पदनाम	पदोन्नति का पद एवं दिनांक	पदोन्नति के बाद तैनाती का स्थान
1.	श्रीमती एस राजलक्ष्मी, कनिष्ठ अभियंता	सहायक अभियंता प्रभावी कार्य दिवस 28.06.2021	अ. प्र., राजविअ, बेंगलुरु
2.	श्री पी. चन्नैया, कनिष्ठ अभियंत	सहायक अभियंता प्रभावी कार्य दिवस	अ. प्र., राजविअ, बेंगलुरु
3.	श्रीमती तृप्ता ढींगरा प्रमुख लिपिक	अधीक्षक ग्रेड–।। प्रभावी कार्य दिवस 01.07.2021	राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली
4.	श्री ओम प्रकाश लिखार प्रमुख लिपिक	अधीक्षक ग्रेड–।। प्रभावी कार्य दिवस 01.07.2021	अ. प्र., राजविअ, झांसी
5.	श्री योगेश अवर श्रेणी लिपिक	प्रवर श्रेणी लिपिक प्रभावी कार्य दिवस 02.07.2021	राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली।
6.	श्री नरेंद्र कुमार अवर श्रेणी लिपिक	प्रवर श्रेणी लिपिक प्रभावी कार्य दिवस 02.07.2021	राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली
7.	श्री अजय प्रताप सिंह, अवर श्रेणी लिपिक	प्रवर श्रेणी लिपिक प्रभावी कार्य दिवस 02.07.2021	राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली।
8.	एस.के. बल प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रमुख लिपिक प्रभावी कार्य दिवस 01.07.2021	अ. प्र., राजविअ, भुवनेश्वर
9.	श्री डी.के. शर्मा, अधीक्षण अभियंता	निदेशक (तक.) प्रभावी कार्य दिवस 02.08.2021	राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली।
10.	श्री एस.आर. माहौर उप निदेशक	अधीक्षण अभियंता–दक्षिण प्रभावी कार्य दिवस 02.08.2021	राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली।
11.	श्री एन.एस.आर.के. रेड्डी, अधिशासी अभियंता	अधीक्षण अभियंता प्रभावी कार्य दिवस 02.08.2021	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद
12.	श्रीमती कृष्णाबेन परेश देसाई, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रमुख लिपिक प्रभावी कार्य दिवस 02.08.2021	अ. वृ., राजविअ, वलसाड
13.	श्री एम.एम. ढल, आशुलिपिक ग्रेड–II	आशुलिपिक ग्रेड–I प्रभावी कार्य दिवस 03.08.2021	अ. प्र., राजविअ, भुवनेश्वर
14.	श्री वी.जाशुवा, कनिष्ठ अभियंता	सहायक अभियंता प्रभावी कार्य दिवस 16.08.2021	मु. अ. (दक्षिण), राजविअ का कार्यालय, हैदराबाद

15.	श्री के.के. राव, सहायक अभियंता	सहायक निदेशक प्रभावी कार्य दिवस 01.09.2021	राजविअ, (मुख्यालय) नई दिल्ली
16.	श्री एस के श्रीवास्तव कनिष्ठ अभियंता	सहायक अभियंता प्रभावी कार्य दिवस 01.09.2021	राजविअ, (मुख्यालय) नई दिल्ली
17.	श्रीमती शोभा रावत, आशुलिपिक ग्रेड–I	निजी सचिव प्रभावी कार्य दिवस 01.09.2021	राजविअ, (मुख्यालय) नई दिल्ली
18.	श्रीमती बिबियाना सांगा आशुलिपिक ग्रेड–II	आशुलिपिक ग्रेड–I प्रभावी कार्य दिवस 01.09.2021	अ. प्र., राजविअ, लखनऊ
19.	श्रीमती संगीता मेहरोत्रा आशुलिपिक ग्रेड–II	आशुलिपिक ग्रेड–I प्रभावी कार्य दिवस 01.09.2021	राजविअ, (मुख्यालय) नई दिल्ली

(ख) सेवानिवृत्ति / त्यागपत्र / प्रत्यावर्तन
राजविअ से सेवानिवृत्ति / त्यागपत्र / प्रत्यावर्तन पदाधिकारी।

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम	सेवानिवृत्ति / प्रत्यावर्तन का दिनांक
1.	श्री मुजफ्फर अहमद, निदेशक (तकनीकी), राजविअ, नई दिल्ली।	31.07.2021
2.	श्री आर.के. खरबंदा, अधीक्षण अभियंता, राजविअ, नई दिल्ली।	31.07.2021
3.	श्रीमती लीलम्मा निनन, आशुलिपिक ग्रेड I, राजविअ, नई दिल्ली।	31.07.2021
4.	श्री मल्लप्पा के. उधगट्टी, सहायक अभियंता, अ. प्र.,–I, राजविअ, नासिक	31.07.2021
5.	श्री विष्णु प्रसाद नेमा, सहायक अभियंता, अ. प्र., राजविअ, भोपाल	31.07.2021
6.	श्रीमती रीता अशोक नाइक, यूडीसी, अ. स., राजविअ, वलसाड	31.07.2021
7.	श्री आर.एन. जाधव, एमटीएस, अ. प्र., राजविअ, बेंगलुरु	31.07.2021
8.	श्री आरिफ हुसैन, एमटीएस, अ. प्र., राजविअ, भुवनेश्वर।	31.07.2021
9.	श्री अंगकन मारिक, अवर श्रेणी लिपिक, राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली (त्यागपत्र)	16.08.2021
10.	श्री पी.सी.एम. राव, सहायक अभियंता, मु.अ. (द), राजविअ, हैदराबाद।	31.08.2021
11.	श्रीमती उर्मिला रानी, आशुलिपिक, राजविअ, नई दिल्ली।	31.08.2021
12.	श्री एन.जे. सरोदे, निजी सचिव, अ. प्र.,–द्वितीय, राजविअ, नासिक	31.08.2021
13.	श्री देवी प्रसाद, प्रधान लिपिक, अ. प्र., –द्वितीय, राजविअ, नासिक	31.08.2021
14.	श्रीमती पी. अंडालू, प्रारूपकार,, राजविअ, हैदराबाद	31.08.2021
15.	श्रीमती डी. जीवमालिनी, कनिष्ठ अभियंता, अ. प्र.,, राजविअ, बेंगलुरु। (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)	31.08.2021

16.	श्री एम. नीरज अग्रहरी, सहायक अभियंता, अ. प्र., राजविअ, भुवनेश्वर (त्यागपत्र)	10.09.2021
17.	श्री निकुंज मलिक, कनिष्ठ अभियंता, राजविअ, (मुख्यालय) नई दिल्ली (त्यागपत्र)	23.09.2021
18.	श्री शुभम अग्रवाल, सहायक अभियंता, राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली (त्यागपत्र)	24.09.2021
19.	श्री एम. श्रीनिवास, प्रधान लिपिक, अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	30.09.2021
20.	श्री सुनील कुमार, प्र.श्रे. लि, अ. प्र., राजविअ, पटना	30.09.2021
21.	श्री बी.के.एस. ठाकुर, कार्यपालक अभियंता, अ. प्र., राजविअ, पटना (स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)	30.09.2021
22.	श्री सोनू कुमार, अ.श्रे.लि, राजविअ (मुख्यालय), नई दिल्ली। (त्यागपत्र)	30.09.2021
23.	श्री ललित कुमार सामंतराय, प्रशासनिक. अधिकारी, राजविअ, (मुख्यालय), नई दिल्ली। (प्रत्यावर्तित)	12.09.2021

तकनीकी संगोष्ठी की रिपोर्ट

विषय :''भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम''

उद्घाटन सत्र

दिनांक 25 अक्तूबर, 2021 को **आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत ''भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम'' विषय पर नई दिल्ली** में तकनीकी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में माननीय श्री श्रीराम विदेरे, सलाहकार, जल शक्ति मंत्रालय मुख्य अतिथि थे तथा श्री एस. के. हलदर, अध्यक्ष केंद्रीय जल आयोग विशिष्ट अतिथि थे। श्री भोपाल सिंह, महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने इस समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर अन्य गणमान्य अधिकारियों के साथ श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), श्री विजय सरन, मुख्य अभियंता, आरेखन (ई व एन ई), केंद्रीय जल आयोग, डॉ. आर एन संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा तथा श्री शिव प्रकाश मुख्य अभियंता (उत्तर) तथा श्री डी. के. शर्मा निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी भी उपस्थित थे। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण की ओर से सभी सम्मान्य जनों का जीवन के प्रतीक नई पौध से स्वागत किया गया।

सभी गणमान्य अधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर संगोष्ठी का शुभारंभ किया। इसके पश्चात सभी सम्मान्य अधिकारियों ने इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका का लोकार्पण किया। स्मारिका में माननीय जल शक्ति मंत्री, भारत सरकार, श्री गजेंद्र सिंह शेखावत का संदेश, माननीय जल शक्ति राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री विश्वेश्वर टुडु का संदेश, सचिव, जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग, भारत सरकार, श्री पंकज कुमार, का शुभकामना संदेश एवं महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्री भोपाल सिंह के संदेश, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्री आर.के. जैन का शुभकामना संदेश, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्री डी.के. शर्मा द्वारा संपादकीय तथा सहायक निदेशक (राजभाषा), राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, श्रीमती अर्चना गुप्त द्वारा प्रस्तावना के साथ राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण एवं मंत्रालय के अन्य संगठनों के 16 लेखकों के लेख प्रकाशित किए गए हैं।

श्री डी.के. शर्मा, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में मुख्य अतिथि, माननीय श्री राम विदेरे, सलाहकार, जल शक्ति मंत्रालय, विशिष्ट अतिथि श्री एस के हलदर, अध्यक्ष केंद्रीय जल आयोग विशिष्ट अतिथि, श्री विजय सरन, मुख्य अभियंता, आरेखन (ई व एन ई), केंद्रीय जल आयोग, संगोष्ठी के अध्यक्ष, श्री भोपाल सिंह, महानिदेशक, श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), श्री शिव प्रकाश, मुख्य अभियंता (उत्तर), डॉ. आर. एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) और इस अवसर पर उपस्थित अन्य कार्यालयों से पधारे अन्य अधिकारियों का हार्दिक स्वागत किया। स्मारिका का विमोचन भी संपन्न हुआ।

श्री श्रीराम विदेरे ने अपने उद्घाटन भाषण में हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि '' बड़े हर्ष का विषय है कि मैं राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा आयोजित ''75 वें आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत हिन्दी में तकनीकी संगोष्ठी'' के आयोजन के लिए आप सब के बीच हूं। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण को और विशेषकर श्री भोपाल सिंह जी का बहुत–बहुत धन्यवाद जिन्होंने इस विषय पर अपनी बात रखने के लिए मुझे मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है। उन्होंने कहा कि वास्तव में इस तकनीकी संगोष्ठी के अवसर आप सब को संबोधित करते हुए और अपने विचार प्रस्तु त करते हुए मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मान रहा हूं। मुझे लगता है कि इस संगोष्ठी का जो शीर्षक चुना गया है वह केवल राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का ज्वलंत मुद्दा है जिस समस्या से पूरी दुनिया के लोग चिंतित हैं, परंतु यह भी हमारा सौभाग्य है कि हम इस वैश्विक समस्या का समाधान तलाशने में प्रयासरत हैं।

हम जल संसाधनों के विकास एवं संरक्षण में वैज्ञानिक एवं तकनीकी रूप से अपने–अपने स्तर पर निरंतर कार्य कर रहे हैं परन्तुं यह व्यावहारिक सच है कि जल संसाधन जैसे क्षेत्र में धरातल पर कार्य करना जितना आसान समझा जाता है उतना आसान होता नहीं है और इस कार्य को मूर्तरूप देना हमारी भविष्य की आवश्यकताओं की मांग है जिस पर प्राणिमात्र के सभी ताने–बाने बुने हुए हैं, बुने जा रहे हैं और भविष्य में भी बुने जाएंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

वस्तुतः 'भारतीय नदियों के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम' विषय पर आयोजित की जाने वाली आज की इस संगोष्ठी का विषय आज के सामाजिक सरोकारों से बहुत गहराई से जुड़ा हुआ विषय है और जब इन सामाजिक सरोकारों के मुद्दों को जन–जन की भाषा में उठाया जाए तो आज के परिप्रेक्ष्य में इसका महत्व एवं इसकी उपयोगिता और अधिक प्रासंगिक हो जाती है। सही अर्थों में देखा जाय तो जल संबंधी इन संवेदनशील मामलों पर जल उपयोग करने वालों की तुलना में भारत सरकार हम आम जन से कहीं अधिक चिंतित और विचारशील नजर आती है। परंतु अंततः जल उपयोग, सदुपयोग, दुरूपयोग, संरक्षण, संवर्धन, प्रबंधन संबंधी सभी पहलुओं पर अपने भविष्य को देखते हुए अपने ही स्वार्थ के लिए हमें अपने विवेक का स्तेमाल करते हुए सभी पहलुओं के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं पर स्वयं ही विचार करना है। यही हमारा दायित्व भी है और इसी बात की प्रेरणा हमें माननीय प्रधानमंत्री जी भी समय समय पर देते रहते हैं।

जल संसाधन के इस कार्य में लगे हुए सभी भागीदारों के परस्पर सहयोग पर भी बल देना चाहते हैं तथा समाज को लाभ पहुंचाने के लक्ष्ये को प्राप्त करने की बेहतर समझ को विकसित कर नदी जोड़ के कार्यक्रम को और आगे बढ़ाते हुए इसे क्रियान्वयन के स्तर पर लाएं क्योंकि नदियों को जोड़ने के कार्यक्रम में देश का भविष्य निहित है। यह परियोजना न केवल और अधिक क्षेत्र को सिंचाई सुविधाएं उपलब्धय करायेगी बल्कि वर्ष 2050 तक बढ़ी हुई जन संख्या को आवश्यक खाद्यान्न भी उपलब्ध करायेगी।

यह सभी को ज्ञात है कि समय और काल में जल वितरण की बदलती प्रक्रियाओं के कारण जलवायु परिवर्तन जीवन के विविध रूपों तथा पारिस्थितिकी एवं जल को प्रभावित कर रहा है। शहरीकरण, कृषि, उद्योग तथा जलवायु परिवर्तन हमारे संसाधनों की गुणवत्ता तथा मात्रा दोनों पर अत्यधिक दबाव डाल रहे हैं। सरकार इन सभी पहलुओं पर सभी भागीदारों को शामिल करते हुए उचित उपायों को अपनाकर जलवायु परिवर्तन के विपरीत प्रभावों को समाप्त करने का गंभीर प्रयास कर रही है और मैं यही कहना चाहूंगा कि जल जैसे जीवनदायी पदार्थ पर हमने अब तक बहुत चर्चा एवं विचार विमर्श कर लिया, अब हमारा यही दायित्व एवं भरसक प्रयास होना चाहिए कि किस प्रकार जल के प्रबंधन को मूर्त रूप दिया जाए और अपने भविष्य को और सुरक्षित बनाया जाए। आगे उन्होंने इस बात पर बल देते हुए कहा कि अंततः इसके लिए हमें कोई ठोस और व्यावहारिक कदम उठाने ही होंगे। व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो आज की यह संगोष्ठी हिन्दी में कार्य करने वाले अभियंताओं, वैज्ञानिकों एवं विषेशज्ञों के लिए प्रेरणादायक है। इस अभिनव प्रयास के लिए राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण को और आगामी सत्र में लेख प्रस्तुत करने वाले सभी प्रतिभागियों को मैं अग्रिम बधाई और शुभकामनाएं देना चाहता हूं।''

श्री एस के हलदर ने अपने भाषण में इस बात पर जोर देते हुए कहा कि ''75 वें आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत ''भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक एवं पर्यावरणीय आयाम'' विषय पर हिन्दी में तकनीकी संगोष्ठी पर राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण द्वारा आयोजित संगोष्ठी में आप सबके साथ आकर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है।

उन्होंने कहा कि सबसे पहले तो मैं राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के महानिदेशक श्री भोपाल सिंह जी को इस बात के लिए हार्दिक धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने हिन्दी का परचम लहराते हुए हिन्दी में तकनीकी विषयों पर संगोष्ठी का आयोजन कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है और मुझे भी अपनी इस विशिष्ट उपलब्धि में शामिल होने का सुअवसर प्रदान करने के लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूँ।

उन्होंने बताया कि आज का विषय बहुत गंभीर है। यह विषय किसी से छिपा नहीं है। ग्लोबल वार्मिंग की वजह से उत्पन्न हो रही समस्याएं विकराल रूप लेती जा रही हैं और ये दिनों दिन बढती ही जा रही हैं। परन्तु हम इनके निदान की ओर सोच ही नहीं रहे हैं या यूं कहें कि जो चीज जब तक आसानी से मिल जाती हैं हम उसकी कीमत नहीं समझते। इन समस्याओं में जल का संरक्षण एवं उसके अधिकतम उपयोग के साथ उसका प्रबंधन तथा क्रियान्वयन के साथ उसके संगम पहलुओं पर उठने वाले मुद्दे भी आज एक समस्या बन कर उभर रहे हैं जिनकी अनदेखी कदापि नहीं की जा सकती। यह समस्या प्रकृति प्रदत्त नहीं है बल्कि मानव निर्मित है। इसके कारण भविष्य में जल जनित संकट से जो विभीषिका बनकर उभरने वाली है उसकी मात्र कल्पना करने से मन में घबराहट होती है। जल को अगली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रखना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। अब यह जल हमारी आवश्यकता ही नहीं है बल्कि हमें जीवन के लिए ऑक्सीजन की तरह जल की आवश्यकता है। और अंत में उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण राष्ट्र के सबसे बड़े मुद्दे को लेकर आगे बढ़ रहा है इस मुद्दे से सम्पूर्ण जीव जगत को जीवन देने का एक अभिनव प्रयास किया जा रहा है।''

महानिदेशक महोदय ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कहा कि ''आज की संगोष्ठी का विषय ''**भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम**'' बहुत उपयुक्त है और यह वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सभी संभावनाओं को पूरा करने की इच्छा को अपने अंदर समेटे हुए है तथा वर्तमान समस्याओं एवं मांगों से जुड़ा हुआ है। भारत के स्वर्णिम भविष्य के लिए राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण नदियों के अंतर्योजन के माध्यम से राष्ट्र को खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। जल के कुशल प्रबंधन के द्वारा ही देश की वर्तमान आशाओं एवं आकांक्षाओं पर हम खरे उतर सकते हैं। वैसे तो तकनीकी कार्य हिन्दी में करना कठिन प्रतीत होता है परन्तु यह कार्य इतना भी कठिन नहीं है कि हम अपनी सोच और समझ को अपनी मातृभाषा में प्रकट ना कर सकें। उन्होंने आगे कहा कि जल के क्षेत्र में अब आवश्यकताएं एवं उसके उपयोग का हेतु भी बदल चुका है। इस संबंघ में भारत सरकार विश्व स्तर पर विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी आधारित विकास करना चाहती है और इसके लिए सतत प्रयासरत भी है। सरकार का यह प्रयास हमारे और आपके माध्यम से ही पूरे होने हैं क्योंकि इसके उपभोक्ता हम और आप ही हैं। उन्होंने आगे तकनीकी कार्यों की भाषा पर बल देते हुए कहा कि यह हमारे अभियंताओं और संबंधित विशेषज्ञों के लिए बड़े गौरव की बात है कि जनसाधारण की भाषा में ही तकनीकी ज्ञान उन तक पहुंचाया जा रहा है और ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि हम जिनके लाभ के लिए कार्य कर रहे हैं यदि उन तक अपनी बात उनकी आम भाषा में न पहुंचा सकें तो हमारा प्रयास सार्थक सिद्ध नहीं होगा ऐसा मेरा मानना है। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि हम भविष्य में इस तरह के जल संबंधी जटिल विषयों पर संगोष्ठियों के माध्यम से हिन्दी के मौलिक उपयोग को और अधिक बढ़ावा देने में सफल होंगे। मैं आप सभी को आगामी तकनीकी सत्रों में सुनने के लिए उत्सुक हूं।''

तकनीकी सत्र

उद्घाटन समारोह के पश्चात प्रथम तकनीकी सत्र का आरंभ हुआ। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता श्री विजय सरन, मुख्य अभियंता आरेखन (ई व एन ई), केंद्रीय जल आयोग ने की। इस सत्र के उपाध्यक्ष श्री आर के जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय) थे और इस सत्र के रिपोर्टियर श्री बी.एल. शर्मा, अधीक्षक अभियंता, अन्वेषण सर्किल, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, ग्वालियर थे। इस सत्र में 9 वक्ताओं ने प्रस्तुतिकरण दिये जिनके नाम निम्नानुसार हैं:

संगोष्ठी की स्मारिका में प्रकाशित सभी 16 लेखों में से 09 लखकों ने अपनी लेखों पर प्रस्तुति करण दिया जिनके नाम इस प्रकार हैं–

1. डॉ. आर एन संखुआ मुख्य अभियंता (दक्षिण)
2. श्री धमेंद्र कुमार शर्मा, निदेशक (तकनीकी) व राजभाषा अधिकारी
3. श्री उदय रोमन, परियोजना प्रबंधक, वाप्कौस लिमिटेड, भोपाल
4. श्री एनएसआरके रेडडी, अधीक्षण अभियंता, हैदराबाद, तथा श्री शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता हैदराबाद
5. श्री सतीश चंद्र अवस्थी, अधीक्षण अभियंता और श्री पी एन सोनी, सहायक अभियंता
6. श्री नारायण प्रसाद साहू, अधिशासी अभियंता,
7. श्री के. एस. नायुडु, सहायक अभियंता, हैदराबाद
8. श्री हरिओम वार्ष्णेय सहायक अभियंता
9. डॉ. सुप्रिया नाथ, जितेश नारायण व्यास, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे

त्कनीकी सत्र की समाप्ति पर श्री विजय सरन, मुख्य अभियंता आरेखन (ई व एन ई), केंद्रीय जल आयोग ने अपनी अध्यक्षीय टिप्पणियों में सभी लेखकों के लेखों की संक्षिप्त समीक्षा की और श्री अवस्थी द्वारा लेख के स्थान पर सुनाई गई कविता की भी सराहना की। (विस्तृत टिप्पणियां इस रिपोर्ट के अंत में प्रस्तुत हैं)। उन्होंने अपने अभिभाषण में कहा कि ''जल प्रत्येक जीव के लिए आवश्यक होने के साथ–साथ आज के परिदृश्य में जल विकास के लिए भी बहुत आवश्यक है। उपयोग योग्य जल की मात्रा बहुत ही कम है जबकि अनुप्रक्त रूप से समुंद्र में बह जाने वाले जल की मात्रा बहुत अधिक है वर्तमान समय में जब हम जन–जन की भाषा के माध्यम से जल प्रबंधन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के कार्यों को करेंगे तथा उस कार्य को जल उपयोगकर्ता तक पहुंचाएंगे तो यह कार्य हमारे समाज के लिए अधिक सार्थक सिद्ध होगा और हम अनुप्रयुक्त जल को व्यर्थ में बहने से भी बचाएंगे क्योंकि भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे जल संसाधनों के सदुपयोग का संदेश जन–जन तक पहुंचाया जा सकता है। इस कार्य में केवल सरकार से ही अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए बल्कि जल का उपयोग करने वाले प्रत्येक नागरिक का भी यह सामाजिक दायित्व है कि वह इसके अधिकतम उपयोग और व्यावसायिक उपयोग पर बल दे।

इसलिए हमारा यह दायित्व बनता है कि हम इस कार्य में सरकार के साथ मिलकर नदी जोड़ के क्षेत्र में कदम बढ़ाएं तो खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के साथ–साथ नौवहन, मत्स्य पालन, कृषि यातायात, पर्यटन, ऊर्जा उत्पादन, रोजगार की समस्याएं भी समाप्त होंगी और हमारी अगली पीढ़ी आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से और अधिक समृद्ध होगी।''

समापन समारोह

समापन समारोह में श्री भोपाल सिंह, महानिदेशक, राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री विजय सरन, मुख्य अभियंता आरेखन (ई व एन ई), केंद्रीय जल आयोग, श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), श्री डॉ. आर एन संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा श्री शिव प्रकाश मुख्य अभियंता (उत्तर), तथा श्री डी. के. शर्मा निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी भी इस अवसर पर मंच पर पदासीन थे।

मुख्य अभियंता (मुख्यालय) राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण जो इस संगोष्ठी की स्मारिका के संपादक मंडल के अध्यक्ष ने अपने भाषण में बहुत प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि ''न केवल राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण अपितु मंत्रालय के अन्य संगठनों के प्रस्तुतिकरणों ने भी विषय के साथ पूरा न्याय किया है। उन्होंने कहा कि इस संगोष्ठी के संपादक मंडल का अध्यक्ष होने के नाते मैं इससे गहराई से जुड़ा रहा हूं और लेखों की चयन प्रक्रिया के दौरान सभी लेखों को अध्ययन करने का अवसर भी मुझे मिला। नदी जोड़ ही जल संसाधनों के

संरक्षण का भविष्य है। भविष्य की पीढ़ी के लिए हमें आज ही सोचना होगा वरना प्रकृति की ये अपार संपदा कब विलुप्त हो जाएगी हमें पता भी नहीं चलेगा। सरकारी प्रयासों से ही हम इस खतरे से निपट नहीं सकते हैं, इसके लिए हमें जन–जन में यह भावना जागृत करनी होगी कि भविष्य के लिए जल संरक्षण एवं इसका समुचित प्रबंधन हम सबका साझा उत्तरदायित्व है और इसी वजह से हिन्दी में तकनीकी संगोष्ठी करने की योजना बनाई गई। ये हमारी सातवीं संगोष्ठी है और मुझे यह कहते हुए अत्यंत गर्व हो रहा है कि हमारे ज्यादातर इंजीनियर हिन्दी में तकनीकी दृष्टिकोण को साझा करने में सफल हुए हैं।

मंत्रालय के अन्य संगठनों से प्राप्त लेख भी अधिकांशतः वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गए हैं। मैं उनकी भी बहुत सराहना करता हूं। हिन्दी को तकनीकी से जोड़ने की हमारी सोच सफल रही है हर संगोष्ठी में बढ़ती लेखों की संख्या इस बात का प्रमाण है। राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण नदियों के अंतरयोजन के क्रियान्वयन से जुड़ा होने के कारण इस बात को समझता है कि यदि आज हमने नदी जोड़ नहीं बनाए तो कल इस बात के लिए बहुत देर हो जाएगी।''

अंत में श्री डी के शर्मा, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी ने उदघाटन समारोह के मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि तथा तकनीकी सत्र के अध्यक्ष का धन्यवाद किया और कहा कि उन्होंने अपनी उपस्थिति से इस समारोह की गरिमा को और बढ़ाया है। महानिदेशक श्री भोपाल सिंह का धन्यवाद करते हुए कहा कि वे हृदय से उनके आभारी हैं। श्री विजय सरन, मुख्य अभियंता आरेखन (ई व एन ई), केंद्रीय जल आयोग ने इस तकनीकी सत्र की अध्यक्षता कर हमें आगे भविष्य में इस क्षेत्र में और क्या करना है और कैसे करना है इस पर प्रकाश डालकर हमें अनुग्रहीत किया है इसके लिए उनका हार्दिक आभार। उन्होंने राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण के तीनों मुख्य अभियंताओं श्री आर.के.जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), डॉ आर. एन. संखुआ, मुख्य अभियंता (दक्षिण) तथा श्री शिव प्रकाश, मुख्य अभियंता (उत्तर) का धन्यवाद किया। तकनीकी सत्रों के रिपोर्टियर श्री बी एल शर्मा, अधीक्षक अभियंता, ग्वालियर का भी धन्यवाद व्यक्त किया उन्होंने अपने सहयोगियों का भी धन्यवाद किया जिन्होंने संगोष्ठी की लौजिस्टिक व्यवस्था का दायित्व संभाला और पूरी तरह उसका निर्वहन किया। अंत में उन्होंने कहा कि वे संगोष्ठी में पधारे सभी लेखकों और व्यवस्थाकार पदाधिकारियों का भी धन्यवाद करना चाहते हैं जिनके बिना इस संगोष्ठी का आयोजन संभव ही नहीं था।

संगोष्ठी का संचालन श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने किया।

संगोष्ठी की स्मारिका में प्रकाशित सभी लेखों की सारांश टिप्पणियां

1. डॉ. आर एन संखुआ मुख्य अभियंता (दक्षिण) ने अपने लेख ''नदियों के अंतरजोड़ के आर्थिक प्रभावों से गुजरते हुए'' के माध्यम से अपने विचार रखते हुए यह संदेश देने का प्रयास किया है कि किसी भी विकासात्मक परियोजना की स्थिरता अनिवार्य रूप से आवश्यक पारिस्थितिक कारकों को बनाए रखने की क्षमता पर टिकी होती है। कृषि उत्पादन बढ़ाने की दृष्टि से कमान में जल भराव एवं लवणता बारहमासी सिंचाई के दो महत्वपूर्ण परिणाम हैं । इतनी बड़ी मात्रा में कमान में पानी की आवक और स्थायी जल जमाव मलेरिया के सबसे भयानक रूपों को साथ लेकर आ सकता है। कमान में जल जमाव के बारे में अनुमान अलग–अलग दस्तावेजों में और कभी–कभी एक ही दस्तावेज में व्यापक रूप से आंकड़े दिखाते हुए भिन्न होते हैं। इन दस्तावेजों से मामलों की चिंताजनक स्थिति का पता चलता है। इसके कारण फसलों के पैटर्न में बदलाव भी हो सकता है। जिसके कारण अधिक पानी की आवश्यकता वाली फसलों के बजाय कम पानी वाली सघन फसलों ने ली है।
2. श्री धमेंद्र कुमार शर्मा, निदेशक (तकनीकी) व राजभाषा अधिकारी ने अपने लेख ''केन बेतवा लिंक परियोजना– बुंदेलखंड में जल एवं खाद्यान्न सुरक्षा का समाधान" के माध्यम से मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश दोनों राज्यों को इस परियोजना के क्रियान्वयन से सामाजिक, आर्थिक और अन्य क्षेत्रों में बड़े स्तर पर होने वाले संभावित लाभों के बारे में बताया है। जिससे मध्य प्रदेश राज्य की लगभग 41 लाख जनसंख्या तथा उत्तर प्रदेश की 21 लाख जनसंख्या को पेयजल उपलब्ध होगा। यह परियोजना बुंदेलखंड क्षेत्र में रहने वाली विशेषकर महिलाओं के लिए भी एक वरदान है। यह परियोजना दोनों राज्यों को ऊर्जा, मत्स्य पालन तथा पर्यटन के क्षेत्र में भी समृद्ध बनाने पर भी प्रकाश डालते हुए इस परियोजना से सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े बुंदेलखंड क्षेत्र में बड़े स्तर पर निवेश के अवसर प्रदान करने तथा निर्माण के दौरान बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन, परियोजना निर्माण के बाद भी सतत रूप से परिचालन के लिये भी तेजी से रोजगार के अवसर उपलब्ध होने की संभावनाएं व्यक्त की है।
3. श्री उदय रोमन, परियोजना प्रबंधक, वाप्कोस लिमिटेड, भोपाल ने अपने लेख ''भारतीय नदियों की अंतर्योजना के तकनीकी एवं आर्थिक आयाम'' विषय पर विस्तृत विश्लेषण में पर्यावरण को ध्यान में रखते हुए नदी के डिस्चार्ज को सही दिशा में उपयोग करने तथा भंडारणों के माध्यम से भूजल पुनर्भरण को और सुदृढ बनाते हुए नदियों को जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया है। नदी अंतर्योजन के समय यदि भंडारण जलाशयों का उपयोग किया जाये तो नदी के डिस्चायर्ज को नियंत्रित करने में सहायता होगी साथ ही भंडारण जलाशयों की श्रृंखला से भूजल रिचार्ज के उपायों पर भी चर्चा की है।
4. श्री एनएसआरके रेडडी, अधीक्षण अभियंता, हैदराबाद, तथा श्री शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता हैदराबाद ने अपने लेख ''नदियों का परस्पर जोड–कुछ उल्लेखनीय मुददे" के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करते हुए संबंधित राज्य सरकारों के अड़ियल रवय्ये को इस कार्य में बाधक मानते हुए जल की कमी और अधिकता के साथ साथ समय के अनुसार पानी की बढ़ती माँगों के साथ, यह कार्य और अधिक गंभीर होता जा रहा है, इस विषय पर अपनी गहरी दचिंताएं व्यक्त की है। लिंक सिस्टम जिसमें कई नदी बेसिन और हितधारक शामिल होते हैं, जल उपलब्धता, जलमग्नता, भूमि अधिग्रहण, जल बंटवारे, मौजूदा भंडारण और नहर प्रणालियों के एकीकरण, अंतर–राज्यीय पहलुओं, अधिकरण के पंचाट जैसी समस्याएं अलग–अलग विचारों दावों से और जटिल हो जाती हैं जिसके परिणामस्वरूप राज्यों को मनाने का कार्य अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाता है, इस ओर भी ध्यान आकृष्ट कराने का प्रयास किया है।
5. श्री सतीश चंद्र अवस्थी, अधीक्षण अभियंता और श्री पी एन सोनी, सहायक अभियंता ने अपने लेख ''भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम'' पर अपने तकनीकी अनुभवों के आधार पर देश में मानसून के दौरान अधिशेष जल के भंडारण को अधिक समय तक रोक कर रखने संबंधी व्यावहारिक समस्याओं पर बल देते हुए उसके इकोलोजिकल प्रभावों, पाइप लाइन द्वारा नदियों को जोड़ने और जैव विविधता पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

6. श्री नारायण प्रसाद साहू, अधिशासी अभियंता, ने अपने लेख ''नदी जोड़ो एक महत्वाकांक्षी और महत्वपूर्ण परियोजना'' के माध्यम से नदी जोड़ से होने वाले लाभों पर चर्चा की है और यह स्पष्ट किया है कि यह परियोजना हमारे भविष्यि के लिए कितनी लाभकारी सिद्ध हो सकती है जिसके संगत उदाहरणों को भी लेखक ने देने का प्रयास किया है।

7. श्री के. एस. नायुडु, सहायक अभियंता, हैदराबाद, ने ''नदियों के अंतर्योजन में बहार–सदियों का भारतीय सपना साकार'' नामक अपने लेख के माध्यम से जल संसाधन, भू संसाधन तथा मानव संसाधनों की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता को समाज के लाभ के उचित उपयोग की आवश्यक पर बल दिया है और कुशल जल प्रबंधन, नदी जोड़ परियोजना सभी जल संसाधन मुद्दों के समाधान तथा जल संसाधन के ईष्टतम उपयोग के लिए आवश्यक विकल्पों पर भी चर्चा की है और कुशल जल प्रबंधन के संसाधनों के संचयन संबंधी मुद्दों के समाधान खोजने का प्रयास किया है।

8. श्री हरिओम वार्ष्णेय सहायक अभियंता ने अपने लेख ''भारतीय नदियों के अंतर्योजन के तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय आयाम'' के माध्यम से नदियों के अन्तर्योजन परियोजना कार्यक्रम, सिंचाई की अनिश्चितताओं को कम करने और बाढ़ तथा सूखे के प्रतिकूल प्रभाव को और भी कम करने पर ध्यान केन्द्रित करने पर बल दिया है। एक बार जब लिंक नहर बन जाएगी, तब उसे सड़क रेल परिवहन पर दबाव को कम करते हुए यातायात हेतु जलमार्ग के रूप में भी प्रयोग किया जा सकता है, जिसके लिए केन्द्र सरकार ने परियोजना में प्लानिंग स्तर पर ही बदलाव पर अपने सुझाव रखा है।

9. डॉ. सुप्रिया नाथ, जितेश नारायण व्यास, आर. बी. देवगडे, डॉ. प्रभात चंद्र, अनुसंधान सहायक, वैज्ञानिक बी, डी, ई, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे ने अपने लेख ''भारतीय नदियों का अंतर्योजन का उददेश्य और संभावित परिणाम" विषय के माध्यम से यह विचार व्यक्त किया है कि भारत में नदी को वैज्ञानिक तरीके से जोड़ने की परियोजना न केवल बारिश के मौसम के सतही जल को रोककर बाढ़ को कम करेगी, बल्कि पानी की उपलब्धता भी सुनिश्चित करेगी। पूरे देश में लोगों की जरूरतों को समान रूप से और पर्याप्त रूप से पूरा करना परियोजना का उद्देश्य है। पानी की आपूर्ति बढ़ने से सिंचाई में वृद्धि होगी, जिससे फसलों का उत्पादन बढ़ेगा और किसानों की आय बढ़ेगी। हालांकि नदी अन्तर्योजन फायदेमंद है, परन्तु इसका पर्यावरण पर महत्वपूर्ण और खतरनाक प्रभाव पड़ने की आशंका भी है।

10. श्री कुणाल कपूर, डॉ. प्रा. प्र. गाडगे डॉ. मा रा भजंत्री, अनुसंधान सहायक, वैज्ञानिक सी, ई, केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधानशाला, पुणे ने अपने लेख ''भारतीय नदियों का अंतर्योजन –भारत में जल समस्या का समाधान" विषय के माध्यम से यह बताया है कि नदी अन्तर्योजन परियोजना सिंचाई अनिश्चितताओं, बाढ़ और सूखे के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने पर केंद्रित है। एक बार लिंक नहरें बन जाने के बाद, उनका उपयोग नौपरिवहन के लिए जलमार्ग के रूप में भी किया जा सकता है, जिससे रेलध्सड़क परिवहन पर दबाव कम होगा। इसलिए, कार्यक्रम का सफल कार्यान्वयन देश के विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हालांकि नदी अन्तर्योजन परियोजना के प्रमुख और प्रत्यक्ष लाभ कृषि और कृषि पर निर्भर परिवार होंगे, कृषि उत्पादन में वृद्धि के कारण पूरी अर्थव्यवस्था को लाभ होगा। अन्य क्षेत्रों का विकास निर्माण क्षेत्र के पश्चानुबंधन और अग्रानुबंधन की ताकत पर निर्भर करेगा।

तकनीकी संगोष्ठी की झलकियां

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में राजभाषा संबंधी गतिविधियां
मुख्यालय में हिन्दी पखवाड़ा 2021 का आयोजन

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण मुख्यालय, नई दिल्ली एवं क्षेत्रीय कार्यालयों में 14 सितम्बर, 2021 से 28 सितम्बर, 2021 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा किया गया ।

सर्वप्रथम सहायक निदेशक (राजभाषा) ने पखवाड़े की रूपरेखा प्रस्तुत की। मुख्य अभियंता (मुख्यालय) ने सभी साथियों को हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर बधाई दी उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने प्रेरणा और प्रोत्साहन द्वारा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग एवं प्रसार के लिए कई कदम उठाए हैं। समय–समय पर हिन्दी कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और इसी प्रकार की अन्य प्रोत्साहन योजनाओं के माध्यम से सभी को साथ लेकर हिन्दी को बढ़ाने का प्रयास भी इन्ही कदमों में से एक है। जिस पर आप लोग बहुत ध्यान दे रहे हैं । उन्होंने आगे कहा हिन्दी बहुत ही सरल एंव सहज भाषा है। भारत सरकार ने इसे सरकार के कार्यालयों में काम–काज की भाषा घोषित किया है। हम सभी इसका उपयोग बड़ी सरलता से कर सकते हैं। और प्रायः यह देखा गया है कि डीलिंग हैंड द्वारा नोटिग मुख्य रूप से हिन्दी में ही की जाती है। डीलिंग हैंड के इस प्रयास को देखते हुए उच्चाधिकारी भी उस पर अपनी टिप्पणियां एवं हस्ताक्षर आदि हिन्दी में ही करते हैं। हमारे कार्यालय के लिए यह बड़े गौरव की बात है।”

महानिदेशक महोदय ने सभी साथियों को हिन्दी पखवाड़े के शुभारंभ के अवसर पर बधाई दी और अपनी ओर से एक अपील जारी की। (प्रति पृष्ठ संख्या–7 पर प्रस्तुत है) उन्होंने कहा कि “आज हम सब हिन्दी दिवस समारोह एवं हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह के लिए वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से एकत्र हुए हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् 14 सितम्बर, 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, उसी दिन की स्मृति में हम प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस का आयोजन करते हैं और राजभाषा का यह पखवाड़ा मनाते हैं। उन्होंने बहुत प्रसन्नतापूर्वक कहा कि पूरे राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में हिन्दी के प्रति जिस निष्ठा और लगन से काम किया जा रहा है और हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के संबंध में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है और इस क्षेत्र में की गई प्रगति को बराबर बनाए भी हुए हैं इस कार्य में सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का बराबर एवं सराहनीय सहयोग रहा है। इसके लिए आप सभी बधाई के पात्र हैं।”

निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, श्री डी के शर्मा ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिन्दी पखवाड़ा 2021 के उद्घाटन अवसर पर महानिदेशक महोदय, मुख्य अभियंता महोदय एवं अन्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत है। विगत वर्षों की भांति इस बार भी रा.ज.वि.अ. में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया जा रहा है परंतु वर्तमान में कोविड–19 की स्थिति को देखते हुए इसका आयोजन ऑनलाइन किया जा रहा है। सरकारी कामकाज में हिन्दी पत्राचार को बढ़ाने और उसे बनाए रखने के लिए राजभाषा विभाग के नियमानुसार विभिन्न हिन्दी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है और इस पखवाड़े में भी हिन्दी पत्राचार और हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन हेतु हिन्दी में वाद–विवाद प्रतियोगिता, अशुद्धि हटाओ प्रतियोगिता, हिन्दी संबंधी नारा/स्लोगन प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, कविता प्रतियोगिता, राजभाषा नीति और हिन्दी साहित्य से संबंधित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिताओं की जा रही है इसके साथ–साथ वर्ष भर जारी मूल टिप्पण/आलेखन, प्रोत्साहन योजना, श्रुतलेख प्रोत्साहन योजना, तकनीकी लेख प्रोत्साहन योजनाओं का मूल्यांकन भी किया और उनके पुरस्कार भी हिन्दी दिवस समारोह में दिए जाएंगे।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने महानिदेशक महोदय और मुख्य अभियंता (मुख्यालय) महोदय द्वारा हिन्दी पखवाड़े के उद्घाटन समारोह के लिए अपने व्यस्तम कार्यक्रमों में से समय निकालने के लिए उनका धन्यवाद किया। इसके साथ–साथ उन्होंने कार्यपालक अभियंता (मु.) श्री आर चन्द्रशेखरन और उनकी टीम का भी धन्यवाद किया और सभी साथियों से पखवाड़े के कार्यक्रमों में बढ़–चढ़ कर भाग लेने का अनुरोध किया।

अंत में राष्ट्रगान के साथ पखवाड़े के उद्घाटन समारोह का समापन हुआ ।

महानिदेशक, राजविअ द्वारा हिन्दी पखवाड़ा शुभारंभ के अवसर पर राष्ट्रगान की झलकी

हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नानुसार छह विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनमें रा.ज.वि.अ. के सभी पदाधिकारियों ने उत्साहपूर्वक बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और इस पखवाड़े को सफल बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

एक मिनट की स्वभाषण प्रतियोगिता–02.09.2021

दिनांक 02.09.2021 को वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्रीमती जानसी विजयन (एम.डी.यू.) एवं श्री चिरब्रत सरकार, निदेशक (प्रशा.) थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	मोहम्मद इरफान, अवर श्रेणी लिपिक	
2	जसविंदर कौर, सहायक अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	अशुल जैन, कनिष्ठ अभियंता	
	अनुराग, आशुलिपिक	
	महेन्द्र, अवर श्रेणी लिपिक	
3	निधि शर्मा, आशुलिपिक	तृतीय संयुक्त
	प्रिया विज, आशुलिपिक	
	रीता कश्यप, आशुलिपिक	
	के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	
4	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	प्रोत्साहन
5	राजकंवर, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

निबंध प्रतियोगिता –03.09.2021

दिनांक 03.09.2021 को निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इसमें बड़े उत्साह से पदाधिकारियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री एस आर माहौर, अधीक्षक अभियंता तथा श्री सतीश चन्द्र अवस्थी, अधीक्षक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	जसविंदर कौर, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	विमलेश गोस्वामी, प्रारुपकार	
2	सृजिता मुखर्जी, आशुलिपिक	द्वितीय संयुक्त
	उषा रानी, आशुलिपिक	
3	निधि शर्मा, आशुलिपिक	तृतीय संयुक्त
	शुभम अग्रवाल, सहायक अभियंता	
4	प्रिया विज, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	अनुराग, आशुलिपिक	
5	अंशुल जैन, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	अक्षय, आशुलिपिक	

स्लोगन प्रतियोगिता – 06.09.2021

दिनांक 06.09.2021 को स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री सुब्रत हालदर, निदेशक (वित्त.) एवं श्री चिरब्रत सरकार, निदेशक (प्रशा.) थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	जसविंदर कौर, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	अनुराग, आशुलिपिक	
	विनीता शर्मा, सहायक निदेशक	
2	रीता कश्यप, आशुलिपिक	द्वितीय संयुक्त
	महेश चंद, अवर श्रेणी लिपिक	
3	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	रजनी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	
	निखिल वी जे, कनिष्ठ अभियंता	
4	सृजिता मुखर्जी, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	
	असहर ओ.पे, अवर श्रेणी	
5	रामदास सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	

पत्र लेखन प्रतियोगिता 07.09.2021
(केवल चालकों एवं एम.टी.एस. के लिए)

दिनांक 07.09.2021 को प्रार्थना पत्र प्रतियोगिता आयोजित की गई। यह प्रतियोगिता विशेषतौर पर केवल चालकों एवं एम.टी.एस. कर्मचारियों के लिए आयोजित की जाती है। इसमें सभी पदाधिकारियों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया । इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री राजेश कुमार, उपनिदेशक (प्रशासन) और श्री आर. चन्द्रशेखरन, कार्यपालक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	गोपाल दत्त, एम.टी.एस.	प्रथम संयुक्त
	जोगिन्दर, एम.टी.एस.	
	अजय सिंह, वाहन चालक	
2	उमेश चन्द्र, एम.टी.एस.	द्वितीय संयुक्त
	भोपाल सिंह, एम.टी.एस.	
3	राजकंवर, एम.टी.एस.	तृतीय संयुक्त
	पी.एस. नेगी, एम.टी.एस.	
4	दरम्यान सिंह, वाहन चालक	प्रोत्साहन
5	रामेश्वर, एम.टी.एस	प्रोत्साहन

कविता वाचन प्रतियोगिता – 08.09.2021

दिनांक 08.09.2021 को कविता वाचन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें पदाधिकारियों ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री एस आर माहौर, अधीक्षक अभियंता तथा श्री सतीश चन्द्र अवस्थी, अधीक्षक अभियंता थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम(सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	ज्योति राजवेदी, लेखा अधिकारी	प्रथम संयुक्त
	उषा रानी, आशुलिपिक	
2	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	विमलेश गोस्वाामी, प्रारूपकार	
	जसविंदर कौर, सहायक अभियंता	
3	रीता कश्यप, आशुलिपिक	तृतीय संयुक्त
	अनुराग, आशुलिपिक	
	शुभम अग्रवाल, सहायक अभियंता	
4	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारुपकार	
5	निखिल वी जे, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	

मुख्य अभियंता (मु.) राजविअ तथा श्री ज्योति राजवेदी, लेखा अधिकारी कविता वाचन प्रतियोगिता की झलकी

राजभाषा नीति और आजादी का अमृत महोत्सव से संबंधित प्रश्नावली प्रतियोगिता – 09.09.2021

दिनांक 09.09.2021 को राजभाषा नीति और आजादी का अमृत महोत्सव संबंधित प्रश्नावली प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें राजभाषा संबंधित, सामान्य ज्ञान तथा लिखित रूप में लिए गए। इस प्रतियोगिता के निर्णायक श्री डी.के.शर्मा, निदेशक (तक) एवं राजभाषा अधिकारी और श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा) थे। इस प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त करने वाले पदाधिकारियों का विवरण निम्नानुसार है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	निकुंज मलिक, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2	शोभा रावत, निजी सचिव	द्वितीय संयुक्त
	निर्मला सिंह, आशुलिपिक	
3	शुभम अग्रवाल, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
	ललित कुमार स्यानियां, कनिष्ठ अभियंता	
	विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	
4	रामकिशन, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	के.सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	
5	नलिनी मोहन, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	सृजिता मुखर्जी, आशुलिपिक	
	असहर ओ.पे, अवर श्रेणी	

निदेशक (तक.) व राजभाषा अधिकारीः प्रश्नावली प्रतियोगिता की झलकी

राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण में वर्ष भर चलाई जाने वाली प्रोत्साहन योजनाओं के पुरस्कारों का विवरण निम्नानुसार है :

1.मूल टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन योजना

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	ईश्वर लाल मौर्य, प्रारूपकार	प्रथम
2	विक्रम सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रथम
3	संजीव कुमार राणा, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
4	मिथलेश मौर्या, प्रवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
5	शशि भूषण पांडेय, कनिष्ठण लेखा अधिकारी	द्वितीय
6	महेंद्र श्योडरेन, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
7	रमेश चंद्र, प्रारूपकार	तृतीय
8	मो. इरफान, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
9	रजनी शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
10	के. सी. बघेल, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय

2.श्रुतलेख प्रोत्साहन योजना :

दोनों अधिकारियों और आशुलिपिकों को संयुक्त रूप से पुरस्कार देने की अनुशंसा की जाती है:

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	डी. के. शर्मा, अधीक्षण अभियंता	अधिकारी वर्ग
	ऊषा रानी, आशुलिपिक	कर्मचारी वर्ग
2	राकेश कुमार गुप्ता, कार्यपालक अभियंता (मु.)	अधिकारी वर्ग
	रीना वाधवा, आशुलिपिक	कर्मचारी वर्ग

3. तकनीकी लेख प्रोत्साहन योजना :

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	सतीश चंद्र अवस्थी, अधीक्षण अभियंता	प्रथम संयुक्त
2	सियाराम महौर, अधीक्षण अभियंता	
3	राम किशन, सहायक अभियंता	द्वितीय
4	साली अरूण गंगाधर, प्रारूपकार	तृतीय
5	राधा, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन
6	रीता कश्यप, आशुलिपिक	प्रोत्साहन

वर्ष 2020 – 2021 की क्षेत्रीय कार्यालयों हेतु ''राजभाषा वैजयंती, अन्वेषण सर्किल, भुवनेश्वर को और लघु राजभाषा वैजयंती उसके अधीनस्थ अन्वेषण प्रभाग, भुवनेश्वर, अन्वेषण प्रभाग, कोलकाता को देने की अनुशंसा की जाती है।

समापन समारोह

दिनांक 28.09.2021 को हिन्दी पखवाड़े का समापन समारोह का आयोजन वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा किया गया ।

मुख्य अभियंता महोदय ने कहा कि हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास भी है कि हिन्दी भाषा के माध्यम से हम अपने सभी प्रकार के काम सरलता से पूरा करने में सक्षम हैं।

महानिदेशक महोदय ने हिन्दी पखवाड़े की सभी प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को पुरस्कारों को जीतने की बधाई दी और इस उत्साह को सदा कायम रखने की प्रेरणा दी ।

अंत में निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा सूचित किया। प्रतियोगिताओं तथा प्रोत्साहन योजनाओं के सभी निर्णायकों ने निर्णय लेते समय ध्यान में रखा है कि जो पदाधिकारी हिन्दी में काम करते हैं उन्हें पूरा प्रोत्साहन मिले और दूसरे लोगों को भी प्रेरणा मिले कि वो अपना काम हिन्दी में कर सकते हैं ।

सहायक निदेशक (राजभाषा) ने पुरस्कारों संबंधी उद्घोषणा की तथा महानिदेशक महोदय, मुख्य अभियंता (मुख्यालय), निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी, निर्णायक की भूमिका निभाने वाले सभी वरिष्ठ अधिकारियों का धन्यवाद किया तथा अपने सहकर्मियों को हार्दिक धन्यवाद दिया।

राष्ट्रगान के साथ समापन समारोह की इति हुई ।

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन
मुख्य अभियंता (उत्तर) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा–2020 का आयोजन

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ

मुख्य अभियंता (उत्तर), रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

निबंध प्रतियोगिता

<table>
<tr><th>क्र.सं.</th><th>नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)</th><th>पुरस्कार</th></tr>
<tr><td rowspan="2">1.</td><td>राजीव कनौजिया, सहायक अभियन्ता</td><td rowspan="2">प्रथम संयुक्त</td></tr>
<tr><td>हरि ओम वार्ष्णेय, सहायक अभियन्ता</td></tr>
<tr><td rowspan="2">2</td><td>सुभाष चन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियन्ता</td><td rowspan="2">द्वितीय संयुक्त</td></tr>
<tr><td>शिवा कान्त पाण्डेय, कनिष्ठ अभियन्ता</td></tr>
<tr><td rowspan="3">3.</td><td>अहीश कुमार, कनिष्ठ अभियंता</td><td rowspan="3">तृतीय संयुक्त</td></tr>
<tr><td>राजेन्द्र सिंह नयाल, अवर श्रेणी लिपिक</td></tr>
<tr><td>अमन त्रिवेदी, आशुलिपिक</td></tr>
<tr><td rowspan="2">4.</td><td>खुशी राम, अवर श्रेणी लिपिक</td><td rowspan="2">प्रोत्साहन संयुक्त</td></tr>
<tr><td>प्रमोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक</td></tr>
<tr><td rowspan="2">5.</td><td>एस बी सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक</td><td rowspan="2">प्रोत्साहन संयुक्त</td></tr>
<tr><td>जय प्रकाश, एम.टी.एस.</td></tr>
</table>

कविता वाचन प्रतियोगिता

<table>
<tr><th>क्र.सं.</th><th>नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)</th><th>पुरस्कार</th></tr>
<tr><td rowspan="2">1.</td><td>सुभाष चन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियंता</td><td rowspan="2">प्रथम संयुक्त</td></tr>
<tr><td>शिवा कान्त पाण्डेय, कनिष्ठ अभियन्ता</td></tr>
<tr><td rowspan="2">2.</td><td>राजीव कनौजिया, सहायक अभियन्ता</td><td rowspan="2">द्वितीय संयुक्त</td></tr>
<tr><td>हरि ओम वार्ष्णेय, सहायक अभियन्ता</td></tr>
<tr><td rowspan="3">3.</td><td>अहीश कुमार, कनिष्ठ अभियंता</td><td rowspan="3">तृतीय संयुक्त</td></tr>
<tr><td>राजेन्द्र सिंह नयाल, अवर श्रेणी लिपिक</td></tr>
<tr><td>अमन त्रिवेदी, आशुलिपिक</td></tr>
<tr><td rowspan="2">4.</td><td>एस बी सिंह, प्रवर श्रेणी लिपिक</td><td rowspan="2">प्रोत्साहन संयुक्त</td></tr>
<tr><td>खुशी राम, अवर श्रेणी लिपिक</td></tr>
<tr><td rowspan="2">5.</td><td>प्रमोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक</td><td rowspan="2">प्रोत्साहन संयुक्त</td></tr>
<tr><td>जय प्रकाश, एम.टी.एस.</td></tr>
</table>

अन्वेषण सर्किल रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर में संयुक्त रूप से दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। उद्घाटन समारोह में कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का अनुरोध किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है।

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर (अन्वेषण उप–प्रभाग, जयपुर सहित)

06.09.2021 अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर 'हिन्दी श्रुतलेख' प्रतियोगिता आयोजित की गई।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता– 08.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	दीपक नाफड़े, आशुलिपिक	प्रथम
2	पी.एन. सोनी, क.अ.	द्वितीय
3	प्रवीण दीक्षित, अ.श्रे.लि.	तृतीय
4	बी.डी. शर्मा, क.अ.	प्रोत्साहन
5	गीता बाथम, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

09.09.2021 अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर 'कार्यालयीन पत्राचार के विभिन्न प्रकार एवं प्रारूप' विषय पर कार्यषाला आयोजित की गई।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता– 13.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	पी.एन. सोनी, क.अ.	प्रथम
2	दीपक नाफड़े, आशुलिपिक	द्वितीय
3	बी.डी. शर्मा, क.अ.	तृतीय संयुक्त
	आशु सोनी, अ.श्रे.लि.	
4	गीता बाथम, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन
5	प्रवीण दीक्षित, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता– 08.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	सुधांश वरेनिया, क.अ.	प्रथम
2	राकेश कुमार, प्रारूपकार	द्वितीय संयुक्त
	रोहित, अ.श्रे.लि.	
3	रमाकान्त मिश्रा, क.अ.	तृतीय संयुक्त
	मोहन सिंह, चालक	
4	पी.के.वर्मा, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन
5	सुभाष सक्सेना, प्र.श्रे.लि.	प्रोत्साहन
6	सचिन कुमार, क.ले.	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., ग्वालियर

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता– 13.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	राकेश कुमार, प्रारूपकार	प्रथम संयुक्त
	रमाकान्त मिश्रा, कनिष्ठ अभियंता	
2	पी के वर्मा, सहायक अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	सचिन कुमार, कनिष्ठ लेखाकार	
3	पवन, अ.श्रे.लि.	तृतीय संयुक्त
4	आर. के. तोमर, एम.टी.एस.	
5	सुधांश बरेनिया, क.अ.	प्रोत्साहन
6	सुभाष सक्सैना, प्रधान लिपिक	प्रोत्साहन
7	रोहित, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन
8	मोहन सिंह, चालक	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी में दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। उद्घाटन समारोह में कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का अनुरोध किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है।

श्रुतलेखन प्रतियोगिता–06.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	अमित तिवारी क.अ.	प्रथम
2.	शुभम जैन, क.अ.	द्वितीय संयुक्त
	विनीत, निम्न श्रेणी लिपिक	
3.	आर.के. बिजोरिया, स.अ.	तृतीय संयुक्त
	ओम प्रकाश लिखार, प्रधान लिपिक	
4.	जी.एस.सोनी, स.अ.	प्रोत्साहन
5.	राजेश कुमार, वाहन चालक	प्रोत्साहन

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता–09.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	शुभम जैन, क.अ.	प्रथम संयुक्त
	विनीत, निम्न श्रेणी लिपिक	
2.	अमित तिवारी क.अ.	द्वितीय
3.	आर.के. बिजोरिया, स.अ.	तृतीय संयुक्त
	ओम प्रकाश लिखार, प्रधान लिपिक	
4.	जी.एस.सोनी, स.अ.	प्रोत्साहन
5.	राजेश कुमार, वाहन चालक	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भोपाल

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., झांसी में दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। उद्घाटन समारोह में कार्यालयी कार्य में राजभाषा के अधिकतम उपयोग करने का अनुरोध किया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है।

शुद्व लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	स्नेहा अ. विश्वरूप, प्रधान लिपिक	प्रथम संयुक्त
	गोविन्द, आशुलिपिक	
2.	पी के राठौर, स.अ.	द्वितीय संयुक्त
	कपिल, अवर श्रेणी लिपिक	
3.	रंजना शुक्ला, कम्प्यूटर ऑपरेटर	तृतीय संयुक्त
	सौरभ मालवीय, कम्प्यूटर ऑपरेटर	
4.	साली अरूण गंगाधर, प्रारूपकार	प्रोत्साहन संयुक्त
	अमित सैन, अवर श्रेणी लिपिक	
5.	सोनू शर्मा, एम टी एस	प्रोत्साहन संयुक्त
	शालिकराम पाठक, एम टी एस	

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	स्नेहा अ. विश्वरूप, प्रधान लिपिक	प्रथम संयुक्त
	अमित सैन, अवर श्रेणी लिपिक	
2.	कपिल, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय संयुक्त
	रंजना शुक्ला, कम्प्यूटर ऑपरेटर	
3.	पी के राठौर, स.अ.	तृतीय संयुक्त
	शालिकराम पाठक, एम टी एस	
4.	साली अरूण गंगाधर, प्रारूपकार	प्रोत्साहन संयुक्त
	सौरभ मालवीय, कम्प्यूटर ऑपरेटर	
5.	गोविन्द, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	नीरज पाल, वाहन चालक	

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर

अन्वेषण सर्किल, भुवनेश्वर रा.ज.वि.अ., में दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों / कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

नारा प्रतियोगिता–07.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस पी तोमर, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	जे महालिक, प्रारूपकार	
	एस आर महापात्र, प्रारूपकार	
2.	ए पी पात्र, प्रधान लिपिक	द्वितीय संयुक्त
	उमाकान्त मिश्र, वाहन चालक	
	के सी सामल, एम.टी.एस.	

3.	डी किरण कुमार, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	यू के रथ, प्रधान लिपिक	
	आर के मलिक, प्रधान लिपिक	
4.	ए नायक, अवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन
5.	आर ए श्रीनिवास, स अधि अभि	प्रोत्साहन संयुक्त
	एम एम धल, आशुलिपिक	

प्रश्नावली प्रतियोगिता–10.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस पी तोमर, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	एम एम धल, आशुलिपिक	
2.	ए. पी. बास्की, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	जे महालिक, प्रारूपकार	
	एस आर महापात्र, प्रारूपकार	
	आर के मलिक, एम.टी.एस.	
3.	आर ए श्रीनिवास, स अधि अभि	तृतीय संयुक्त
	यू के रथ, प्रधान लिपिक	
	उमाकान्त मिश्र, वाहन चालक	
4.	ए पी पात्र, प्रधान लिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	के सी सामल, एम.टी.एस.	
5.	जे के मुदूली, वाहन चालक	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., भुवनेश्वर

नारा प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	के के महान्ती, प्रारूपकार	प्रथम संयुक्त
	बी एल देई, प्रधान लिपिक	
	एस के बल, प्रधान लिपिक	
2	वीवेक दधिच, कनिष्ठ लेखाकार	द्वितीय संयुक्त
	एम कोदंडराम, सहायक अभियंता	
	आर अन पांडा, प्रधान लिपिक	
3	सुजातता सेनापति, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	एस महंती, प्रारूपकार	
	डी.सी. साहु, अवर श्रेणी लिपिक	
4	नीरज अग्रहरी, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	डी एस मल्लिक, प्रधान लिपिक	
	ए के पढी, वाहन चालक	
	पी के आचार्य, एम टी एस	

नारा प्रतियोगिता (अन्वेषण उप–प्रभाग, राजमुंद्री)

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	बी. सुब्रह्यण्यम, एम.टी.एस.	प्रथम
2	के पी राव, सहायक अधिशासी अभियंता	द्वितीय
3	एस सी दाश, एम.टी.एस.	तृतीय

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., कोलकाता

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., कोलकाता, में दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है

प्रश्नावली प्रतियोगिता–02.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	लक्षमण टूडू, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रथम संयुक्त
	पी.के. राउतराय, प्रवर श्रेणी लिपिक	
2.	अनुराग सिंह, कनिष्ठ अभियन्ता,	द्वितीय संयुक्त
	ए एच चौधरी, एम.टी.एस.	
3.	एस.बी. धीरसामन्त, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय संयुक्त
	गौरव शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	
4.	एस सी पारूई, सहायक अभियन्ता	प्रोत्साहन संयुक्त
	बी महान्ती, सहायक अभियन्ता	
5.	जी.बी. सामल, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

शब्दावली परीक्षण एवं हिन्दी व्याकरण प्रतियोगिता–04.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	लक्षमण टूडू, कनिष्ठ अभियन्ता	प्रथम संयुक्त
	एस.बी. धीरसामन्त, प्रवर श्रेणी लिपिक	
2.	गौरव शर्मा, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3.	एस.सी. पारूई, कनिष्ठ अभियन्ता	तृतीय संयुक्त
	बी महान्ती, सहायक अभियन्ता	
4.	पी.के. राउतराय, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन
5.	ए एच चौधरी, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन संयुक्त
	जी.बी. सामल. एस.टी.एस.	

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ., पटना

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., पटना एवं अन्वेषण प्रभाग, अन्वेषण उप प्रभाग, रांची में दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैं:

अन्वेषण सर्किल, रा.ज.वि.अ.

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	बी.के. सिंह, सहायक अभियंता	प्रथम
2	शशि रंजन, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3	करण कुमार, आशुलिपिक	तृतीय
4	निरंजन स्वाईं, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन
5	शुभम पांडेय, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन

अन्वेषण सर्किल रा.ज.वि.अ. पटना
काव्य लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	करण कुमार, आशुलिपिक	प्रथम
2	बी.के. सिंह, सहायक अभियंता	द्वितीय
3	शशि रंजन, अवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
4	निरंजन स्वाइँ, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन
5	दीन दयाल प्रसाद, एमटीएस	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., लखनऊ में दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है।

नारा लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	संजय त्रिपाठी, स.अ.	प्रथम संयुक्त
	विनय सलूजा, क.लेखाकार	
2.	प्रमोद कुमार, क.अ.	द्वितीय संयुक्त
	अशोक कुमार शुक्ला, प्र. श्रे. लि.	
3.	बिबियाना सांगा, आशुलिपिक	तृतीय संयुक्त
	अरविन, अ.श्रे.लि.	
	मनीष कुमार, अ.श्रे.लि.	
4	बिपिन कुमार, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन
5	सुरेश चन्द्र, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

निबंध प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	प्रमोद कुमार, क.अ.	प्रथम संयुक्त
	अशोक कुमार शुक्ला, अ. श्रे. लि.	
2.	बिबियाना सांगा, आशुलिपिक	द्वितीय संयुक्त
	विनय सलूजा, क.लेखाकार	
3.	संजय त्रिपाठी, स.अ.	तृतीय संयुक्त
	बिपिन कुमार, एम. टी. एस.	
	मनीष कुमार, अ.श्रे.लि.	
4.	अरविन, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन
5.	सुरेश चन्द्र, एम.टी.एस.	प्रोत्साहन

मुख्य अभियंता (दक्षिण) के कार्यालयों में हिन्दी पखवाड़ा –2021 का आयोजन

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद

मुख्य अभियंता (दक्षिण), अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., हैदराबाद में संयुक्त रूप से दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2021 तक अपने अपने कार्यालय में ही अलग अलग हिन्दी पखवाड़ा 2021 का आयोजन किया गया। प्रत्येक कार्यालय प्रमुखों ने महानिदेशक महोदय की अपील पढ़ी। हिन्दी पखवाडा–2021 के दौरान मनाये जाने वाले विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी से सभी पदाधिकारियों को अवगत कराया गया। मुख्यालय, राजविअ, नई दिल्ली से जारी किए गए दिशा निर्देशों के अनुपालन में कोविड–19 से उत्पन्न असाधारण स्थिति को देखते हुए सभी प्रतियोगिताएं लिखित रूप में ही आयोजित किया गया है जिस में प्रतियोगी द्वारा अपने सीट पर ही पेपर लिखवाने का प्रबंध किया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार हैं:

शब्दावली प्रतियोगिता–03.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	कार्यालय	पुरस्कार
1	श्री शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	प्रथम संयुक्त
	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
2	घंटा निर्मला, प्रधान प्रारूपकार	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त
	वैभव तिवारी, सहायक अभियंता	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
3	एस . सुरेश , सहायक अभियंता	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	तृतीय संयुक्त
	के.एस.नयुडु , सहायक अभियंता	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
4	विष्णु श्रीकुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त
	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
	जी नरसिम्हा राव, प्रधान लिपिक	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
	एन. सतीश कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
	के. वी.वी.एस.एस.पी.राजु, प्रवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
	मित्रा प्रदीप, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	

निबंध लेखन प्रतियोगिता–06.09.2021

अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता वैभव तिवारी, सहायक अभियंता घंटा निर्मला, प्रधान प्रारूपकार विष्णु श्रीकुमार, कनिष्ठ अभियंता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	कार्यालय	पुरस्कार
1	शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	प्रथम संयुक्त
	के.एस.नयुडु, सहायक अभियंता	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
2	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त
	वैभव तिवारी, सहायक अभियंता	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
3	घंटा निर्मला, प्रधान प्रारूपकार	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	तृतीय संयुक्त
	विष्णु श्रीकुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
4	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त
	के.वी.वी.एस.एस.पी.राजु अ.श्रे.लि.	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
	बिपाशा पाल, आशुलिपिक	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
	एस. वि. शिव कुमार यादव, आशुलिपिक	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
	सत्यनारायणा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
	डी. रामकृष्ण, चालक	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	

प्रश्न मंच प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	कार्यालय	पुरस्कार
1	विष्णु श्रीकुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	प्रथम संयुक्त
	एम वसुंधरा, प्रधान लिपिक	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
	एस. वि. शिव कुमार यादव, आशुलिपिक	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
	के सेखर नायक, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
2	डी. सुधारकर, प्रारूपकार	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	द्वितीय संयुक्त
	सी महेन्धर राज, प्रारूपकार	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
	एंडी, अब्दुल रहीम, चालक	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
	डी. रामकृष्ण, चालक	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
3	के.एस.नयुडु, सहायक अभियंता	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	तृतीय संयुक्त
	अभिलाष कुमार, कनिष्ठ अभियंता	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
	जी वीर्जनन्द, प्रारूपकार	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
	विनोद कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
4	शुभम कुमार, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त
	मित्रा प्रदीप, कनिष्ठ अभियंता	मु.अ.(द), राजविअ, हैदराबाद	
	आर प्रकाश बाबु, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
	के पी महेश्वर, एमटीएस	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
5	एस सुरेश, सहायक अभियंता	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	प्रोत्साहन संयुक्त
	वैभव तिवारी, सहायक अभियंता	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	
	जी नरसिम्हा राव, प्रधान लिपिक	अ. प्र., राजविअ, हैदराबाद	
	एम सत्यनारायणा, प्रवर श्रेणी लिपिक	अ. वृ., राजविअ, हैदराबाद	

अन्वेषण प्रभाग– I, रा.ज.वि.अ., नासिक

अन्वेषण प्रभाग– I रा.ज.वि.अ., नासिक में संयुक्त रूप से दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

अन्ताक्षरी प्रतियोगिता–02.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	लक्ष्मण टूडू, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
	पी के राउतराय, प्रधान लिपिक	
2	अनुराग सिंह, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय
	ए एच चौधरी, एमटीएस	
3	एस बी धीरसामन्त, प्र.श्रे.लि.	तृतीय संयुक्त
	गौरव शर्मा, अ.श्रे.लि.	
4	एस सी पारूई, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	बी महान्ती, सहायक अभियंता	
5	जी बी सामल, एमटीएस	प्रोत्साहन

शब्दावली प्रतियोगिता–02.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	लक्ष्मण टूडू, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम संयुक्त
	एस बी धीरसामन्त, प्र.श्रे.लि.	
2	गौरव शर्मा, अ.श्रे.लि.	द्वितीय
3	एस सी पारूई, सहायक अभियंता	तृतीय संयुक्त
	बी महान्ती, सहायक अभियंता	
4	पी के राउतराय, प्रधान लिपिक	प्रोत्साहन
	ए एच चौधरी, एमटीएस	संयुक्त
5	अनुराग सिंह, कनिष्ठ अभियंता	प्रोत्साहन
	जी बी सामल, एमटीएस	संयुक्त

अन्वेषण प्रभाग–।।, रा.ज.वि.अ., नासिक

अन्वेषण प्रभाग–।। रा.ज.वि.अ., नासिक में संयुक्त रूप से दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े हर्ष एवं उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

शब्द श्रुति लेख प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	अशोक भटेले, सहायक अभियंता	प्रथम
2	खान महोम्मद युसुफ, सहायक अभियंता	द्वितीय
3	अमित कुमार, अ.श्रे.लि.	तृतीय
4	खंडारे प्रशिश विजय, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन
5	पी श्रीनिवासुलु, सहायक अधिशासी अभियंता	प्रोत्साहन

भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	अशोक भटेले, सहायक अभियंता	प्रथम
2	पी श्रीनिवासुलु, सहायक अधिशासी अभियंता	द्वितीय
3	खंडारे प्रशिश विजय, अ.श्रे.लि.	तृतीय
4	अमित कुमार, अ.श्रे.लि	प्रोत्साहन
5	खान महोम्मद युसुफ, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., बेंगलूरू

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., बेंगलूरू में दिनांक 01 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

हिन्दी प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	एस.बी.मुंडरगी, स.अ.,	प्रथम
2	एन.एस.भाग्या, प्र.श्रे–।।	
3	ई.केम्पण्ण, अधीक्षक–।	
4	एस.नीलावती, उ.श्रे.लि.,	
5	पी .चेन्नय्या, स.अ.अ.,	द्वितीय
6	एस.एस.कलडगी, स.अ.,	
7	भारती श्रीराम, आ.लि.–।	
8	गीता एस.के. उ.श्रे.लि.,	
9	एम.पी.कृष्णमूर्ती, स.अ.,	तृतीय
10	महादेवी एस.ए.बिरादार प्र.श्रे–।।	
11	एच.जयरामय्या, क.ले.,	
12	एच.यु.प्रभाकर, उ.श्रे.लि.,	
13	संध्या कुलकर्णि, प्र.श्रे–।।	(प्रोत्साहन–1)
14	एम.चिन्नप्पा, एम.टी.एस.	(प्रोत्साहन–2)

हिन्दी एवं अंग्रेजी शब्दों का अनुवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री / श्रीमती)	पुरस्कार
1	एम.पी.कृष्णमूर्ती, स.अ.,	कावेरी (प्रथम)
2	महादेवी एस.ए.बिरादार प्र.श्रे–।।	
3	भारती श्रीराम, आ.लि.–।	
4	गीता एस.के. उ.श्रे.लि.,	
5	एन.एस.भाग्या, प्र.श्रे–।।	नेत्रावती (द्वितीय)
6	एच.जयरामय्या, क.ले.,	
7	एस.नीलावती, उ.श्रे.लि.,	
8	एच.यु.प्रभाकर, उ.श्रे.लि.,	
9	पी .चेन्नय्या, स.अ.अ.,	गंगा (तृतीय)
10	एस.बी.मुंडरगी, स.अ.,	
11	एस.एस.कलडगी, स.अ.	
12	ई.केम्पण्ण, अधीक्षक–।	
13	ए.बालाकृष्णन, ए.टी.एस.	(प्रोत्साहन–1)
14	जी.राजाण्ण, एम.टी.एस.	(प्रोत्साहन–2)

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., चेन्नई

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., चेन्नई में दिनांक 1 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस दुर्गाबाई, प्रधान लिपिक	प्रथम
2.	टी. महेन्द्रन, क.अ.	द्वितीय
3	आर.पान्डूरंगन, प्रवर श्रेणी लिपिक	तृतीय
4	मोहम्मद इसमाईल सिथ्थिक, क.अ.	प्रोत्साहन
5	बी मणवालन, एमटीएस	प्रोत्साहन

अनुवाद प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1.	एस. गुरूराजन, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2.	एस. राजा, क.अ.	द्वितीय
3	पी पदमजा, प्रारूपकार	तृतीय
4	मोहम्मद इसमाईल सिथ्थिक, क.अ.	प्रोत्साहन
5	आर.पान्डूरंगन, प्रवर श्रेणी लिपिक	प्रोत्साहन

अन्वेषण सर्किल रा.ज.वि.अ., वलसाड

अन्वेषण सर्किल एवं अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वलसाड में दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया।सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान दोनों कार्यालयों में अलग–अलग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है:

अन्वेषण सर्किल
लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	शुभम गुप्ता, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2	क्रिष्णा पी. देसाई, प्र.श्रे.लि	द्वितीय
3	उपन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	कल्पना ए परमार, उच्च श्रेणी लिपिक	
5	बी के टंडेल, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	दिपिका आर.पटेल, अ.श्रे.लि	

अन्वेषण सर्किल
लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	शुभम गुप्ता, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2	जे.डी. पटेल, सहायक अभियंता	द्वितीय
3	उपन्द्र चौधरी, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय
4	बी के टंडेल, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	कल्पना ए परमार, उच्च श्रेणी लिपिक	

लेखन प्रतियोगिता
अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वलसाड

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	एम. डी. ढीम्मर, कनिष्ठ अभियंता	प्रथम
2	आदित्य तिवारी, अवर श्रेणी लिपिक	द्वितीय
3	एस.बी. एकबोटे, प्र.श्रे.लि.	तृतीय
4	एम.डी. पटेल, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	मीनाक्षी डी पार, उच्च श्रेणी लिपिक	

अन्वेषण प्रभाग
लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	आदित्य तिवारी, अवर श्रेणी लिपिक	प्रथम
2	एम. डी. ढीम्मर, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय
3	जे.बी.जानी, कनिष्ठ लेखाकार	तृतीय
4	एम.डी. पटेल, सहायक अभियंता	प्रोत्साहन संयुक्त
	एन.सी. आशरा, प्रारूपकार	

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वडोदरा

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., वडोदरा में दिनांक 01 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

निबंध प्रतियोगिता–03.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	जे.डी.पांडे, सहायक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	अनिल कमार, अवर श्रेणी लिपिक	
2	डी.बी.ओझा, कनिष्ठ अभियंता	द्वितीय संयुक्त
	ओम प्रकाश कुमार, आशुलिपिक	
3	योगेश कुमार. जे.व्यास, प्रारूपकार	तृतीय संयुक्त
	श्लोक विजय, कनिष्ठ अभियंता	
	मो.नबील असलम अंसारी, कनिष्ठ लेखाकार	
4	ए.एन.मेहता,प्रारूपकार	प्रोत्साहन संयुक्त
	धर्मेश कुमार.डी.बी.बारोट, वाहन चालक,	

प्रश्नमंच प्रतियोगिता–09.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	जे.डी.पांडे, सहयक अभियंता	प्रथम संयुक्त
	योगेश कुमार.जे.व्यास, प्रारूपकार	
2	मो.नबील असलम अंसारी, कनिष्ठ लेखाकार	द्वितीय संयुक्त
	अनिल कमार, अवर श्रेणी लिपिक	
3	डी.बी.ओझा, कनिष्ठ अभियंता	तृतीय संयुक्त
	श्लोक विजय, कनिष्ठ अभियंता	
4	ओम प्रकाश कुमार, आशुलिपिक	प्रोत्साहन संयुक्त
	धर्मेश कुमार.डी.बी.बारोट, वाहन चालक,	

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर

अन्वेषण प्रभाग, रा.ज.वि.अ., नागपुर में दिनांक 01 से 14 सितंबर, 2021 तक हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने बड़े उल्लास से भाग लिया। पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है :

हिन्दी भाषा ज्ञान (राजभाषा, शब्दावली, शुद्धलेखन) प्रतियोगिता–04.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	रूपराव आर. हेडाऊ, सहायक अभियंता	प्रथम
2	के.ए. नायुडू, का.अ.	द्वितीय
3	टी.बी.बुर्डे, अधीक्षक–II	तृतीय
4	ए.के.राय, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन

भाषण प्रतियोगिता–09.09.2021

क्र.सं.	नाम एवं पदनाम (सर्वश्री/श्रीमती)	पुरस्कार
1	के.ए. नायुडू, का.अ.ए.के.राय, अ.श्रे.लि.	प्रथम
2	रूपराव आर. हेडाऊ, सहायक अभियंता	द्वितीय
3	टी.बी.बुर्डे, अधीक्षक–II	तृतीय
4	ए.के.राय, अ.श्रे.लि.	प्रोत्साहन

कोरोना काल

अर्चना गुप्त

यह विनाश का दौर बना है अपने आप मिसाल
पनपे कैसे पुनः जिंदगी यह है कठिन सवाल

अनायास जो ग्रास बन रहे, क्रूर काल के आज
उनके ही गम में डूबा है पूरा विश्व समाज

आज समय यह मांग कर रहा, जागो और जगाओ
उनके दुख दर्दों को बांटो, आओ आगे आओ

सुनो भाइयों, बहनों समझो, जीवन का यह मर्म
पर पीड़ा को अपनी जानो, यह मानव का धर्म

इस विपदा की कठिन घड़ी में बनता है यह फर्ज
कहीं चूक बाकी ना छोड़े, मानवता पर कर्ज

इस संकट में मदद आपकी, होगी प्रभु का अर्चन
दान और सेवा से अपनी, करिए, कष्ट निवारण

नाश सृजन का एक छोर है, पर यह अन्त नहीं है
फिर से नया दौर आये, जीवन मंत्र यही है

यह विपदा की घड़ी चाहती, धीरज और विश्वास
हर विनाश के बाद सृजन का शुरू हुआ इतिहास

आओ हम सब यह क्रम समझें, रखें आस भगवान में
साहस करके पुनः जुटें हम, नव नूतन निर्माण में

जो सक्षम हैं दें रोजगार, बाकी हाथ बढ़ाएँ
रूखी सूखी जो भी दे सकें, मिल जुट भूख मिटाएँ

लाखों बच्चे माँ बाप बिन, उनको घर न सही छाँह दें
सूनी जिनकी गोद, वो अपने आँगन उजलाएं

घोर तमस सा कोरोना जाएगा, बीतेगी यह काली रात
हर घर फिर सूरज चमकेगा, भारत फिर सिर मौर बनेगा

सहायक निदेशक (राजभाषा)

राजविअ पदाधिकारियों के बच्चों का कोना

जल संरक्षण पर कविता

बानी

जीवन का आधार जल है,
जल है तो बेहतर कल है,
जल नहीं तो मरना पल–पल है,
बून्द–बून्द करना संचय जल है,

युवा, वृद्ध, माताओं, बहनों,
अब तो मानो कहना
पृथ्वी की अमूल्य धरोहर जल है,
बून्द–बून्द करना संचय जल है,

है प्रकृति का गहना जल,
जिंदगी का सार जल है,
इसको बचाना हर पल है,
बून्द–बून्द करना संचय जल है,

यदि न हुआ संरक्षित जल,
तो मुश्किल होगा मिलना कल,
सोचना हर क्षण, हर पल है,
बून्द–बून्द करना संचय जल है,

कक्षा – 5 वीं (पुत्री श्री विक्रम सिंह)

मैं पानी हूँ 💧💧

प्रखर वाधवा

मैं पानी हूँ 💧💧
आपकी आँखों का पानी
प्यासे की प्यास
बुझाने वाला पानी
रंगहीन, गंधहीन पानी
झील नदी नालों, पोखरों
तालाब और कुँए का पानी
वर्षा का पानी, ओस का पानी
समुन्दर का लहलहाता
इठलाता बलखाता पानी
बर्फ़ का जमा
बादलों का वाष्पित पानी।

मैं पानी हूँ 💧💧
नदियों में बहता
तालाब पोखरों में बँधता
बादलों में आसमान छूता
उड़ता बरसता
फिर बहता
मैं रूकता नहीं
मैं चलता रहता हूँ
अपनी मंज़िल की ओर
सारा जहाँ मेरी मंज़िल।

मैं पानी हूँ 💧💧
मेरे बिना जीवन नहीं
मेरे बिना जग नहीं
मैं ना गिरूँ तो
पड़ जाता सूखा
मैं बरस पड़ूँ
तो आ जाती बाढ़।
मैं पानी हूँ 💧💧

कक्षा – 8 वीं (पुत्र श्रीमती रीना वाधवा)

जल संरक्षण पर चित्र

नीलेश मौर्य

कक्षा – 10 वीं (पुत्र श्री ईश्वर लाल मौर्य)

जल संरक्षण पर चित्र

प्रत्युष वाधवा

कक्षा – 2 (पुत्र श्रीमती रीना वाधवा)

जल विकास राजभाषा विशेषांक

संरक्षक
श्री भोपाल सिंह, महानिदेशक
संपादक मंडल
श्री आर.के. जैन, मुख्य अभियंता (मुख्यालय)
अध्यक्ष
श्री डी के शर्मा, निदेशक (तकनीकी) एवं राजभाषा अधिकारी
सदस्य
श्रीमती अर्चना गुप्त, सहायक निदेशक (राजभाषा)
सदस्य–सचिव

पत्रिका में छपे सभी लेखों के लेखकों के विचार उनके अपने हैं
और राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण उसके लिए उत्तरदायी नहीं है ।

जल विकास **www.nwda.gov.in** पर भी उपलब्ध है
jal vikas can also be accessed at www.nwda.gov.in
राष्ट्रीय जल विकास अभिकरण, 18–20 सामुदायिक केंद्र, साकेत
नई दिल्ली–110017 द्वारा प्रकाशित